चिन्तन को श्रेष्ठ बनाने वाले सुवाक्य

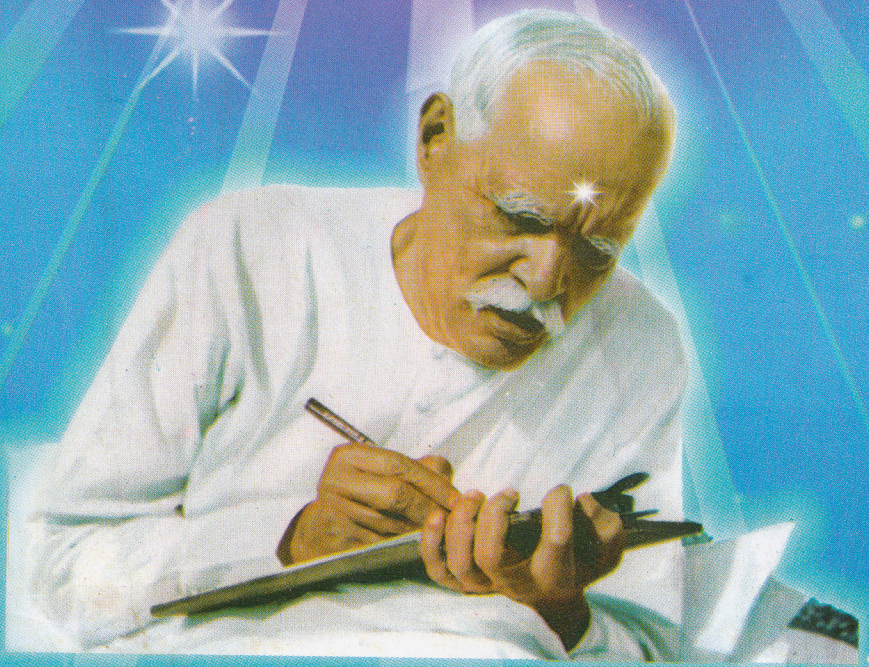

संकलनकर्त्ता :
ब्र.कु. राजू,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत ।

प्रकाशक एवं मुद्रक:
साहित्य विभाग,
ओमशान्ति प्रेस, ज्ञानामृत भवन,
शान्तिवन, आबू रोड – 307 510
☎ – 28124, 28125

पुस्तक मिलने का पता:
साहित्य विभाग,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत – 307 501

कापी राइट:
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत – 307 501
राजस्थान, भारत ।

दो शब्द

परम कल्याणकारी, परम सद्गुरु परमपिता परमात्मा शिव ने अपने अनमोल महावाक्यों के द्वारा जो अमूल्य ज्ञान खज़ाना दिया है, उससे मानव जीवन धन्य-धन्य हो जाता है और अलौकिक तृप्ति को प्राप्त करता है। एक-एक ईश्वरीय महावाक्य में विदेही, स्थितप्रज्ञ, नष्टोमोहा, साक्षात्कारमूर्त और साक्षात् बाप समान बनाने का दिव्य बल समाया हुआ है। जिस प्रकार एक छोटी-सी गोली में शारीरिक कष्ट निवारण की गुप्त शक्ति छिपी रहती है इसी प्रकार छोटे-से-छोटे ईश्वरीय महावाक्य में भी स्व-परिवर्तन और विश्व-परिवर्तन की अमोघ शक्ति समाहित है।

प्रस्तुत पुस्तक ऐसे चुने हुए ईश्वरीय महावाक्यों का ही संकलन है, जिसे आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें विशेष हर्ष हो रहा है। ये महावाक्य ऊँचे-से-ऊँचे विचार (Highest thoughts) तो हैं ही, साथ-ही-साथ पवित्र सुभाषित भी, अनुभवयुक्त उक्तियाँ भी और सफलता दिलाने वाली सूक्तियाँ भी हैं। ईश्वर प्रदत्त इन सूक्तों अथवा महामन्त्रों में से प्रत्येक पर आप प्रतिदिन अभ्यास कर सकते हैं और अपने परिचितों को आशीर्वचन के रूप में भी प्रदान कर सकते हैं।

आशा है आत्मा को सम्पन्न बना कर विश्व-सेवा की वृद्धि में सहायक, यह संकलन आपको पसन्द आएगा।

शुभकामनाओं के साथ,

– ब्र कु. आत्म प्रकाश

अच्छे वायब्रेशन निगेटिव को भी
पॉजिटिव में बदल देते हैं।

शक्तियों को समय पर यूज़ करो तो
बहुत अच्छे अनुभव होंगे।

हर गुण, हर शक्ति का अनुभव करना
अर्थात् अनुभवी मूर्त बनना।

ज्ञान का अर्थ है अनुभव करना और
दूसरों को भी अनुभवी बनाना।

अनुभवी आत्मायें कभी वायुमण्डल वा
संग के रंग में नहीं आ सकती।

सूर्यवंश में जाना है तो योगी बनो, योद्धे नहीं।

हर समय अन्तिम घड़ी है,
इस स्मृति से एवररेडी बनो।

हिम्मत का पहला कदम आगे बढ़ाओ तो
परमात्मा की सम्पूर्ण मदद मिलेगी।

स्व पुरुषार्थ में तीव्र बनो तो आपके वायब्रेशन
से दूसरों की माया सहज भाग जायेगी।

क्वेश्चन मार्क उठना अर्थात्
व्यर्थ का खाता प्रारम्भ होना।

नॉलेजफुल वह है जो माया को दूर से ही
पहचान कर स्वयं को समर्थ बना ले।

शिक्षा दाता के साथ
रहमदिल बन सहयोगी बनो।

आत्मिक भाव धारण करो तो
माया का भान समाप्त हो जायेगा।

देह-भान से मुक्त बनो तो
दूसरे सब बन्धन स्वतः खत्म हो जायेंगे।

बिन्दु रूप में स्थित रहो तो
समस्याओं को सेकण्ड में
बिन्दु लगा सकेंगे।

सोल कान्सेस बनो, डेट कान्सेस नहीं।

वारिस क्वालिटी तैयार करो तब
प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा।

वाणी द्वारा सबको सुख और शान्ति दो तो
गायन योग्य बनेंगे।

सदा मुस्कराते रहना सन्तुष्टता की निशानी है।

उदासी को अपनी दासी बनाओ,
उसे चेहरे पर नहीं आने दो।

नई दुनिया की स्मृति से सर्व गुणों का आह्वान करो
और तीव्रगति से आगे बढ़ो।

जब बच्चों की सूरत से बाप की सीरत दिखाई देगी
तब समाप्ति होगी।

फर्स्ट डिवीजन में आना है तो
ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखो।

आपके जीवन का श्वास खुशी है,
शरीरभले चला जाये लेकिन खुशी न जाये।

श्रेष्ठ संकल्प का एक कदम आपका
और सहयोग के हज़ार कदम परमात्मा के।

ऐसे खुशनुमा बनो जो मन की खुशी
सूरत से स्पष्ट दिखाई दे।

सच्ची खुशनसीबी का अनुभव चेहरे और
चलन से कराओ।

बहुरूपी बन माया के बहुरूपों को परख लो तो
मास्टर मायापति बन जायेंगे।

खुशी के खजाने से सम्पन्न और
खुशी की खुराक से तन्दुरुस्त बनो।

सदा खुशी में रहने के लिए
साक्षीपन की सीट पर स्थित रहो।

बापदादा साथ हो तो
माया का प्रभाव पड़ नहीं सकता।

साक्षीपन के तख्तनशीन रहो तो
समस्या तख्त के नीचे रह जायेगी।

अचानक के पेपर में पास होना है तो
अलबेलेपन को छोड़ अलर्ट बनो।

सेवा को खेल समझो तो थकेंगे नहीं,
सदा लाइट रहेंगे।

लौकिक कार्य करते अलौकिकता का
अनुभव करना ही सरेन्डर होना है।

दृढ़ता ही सफलता की चाबी है।

विघ्नों का काम है आना और
आपका काम है विघ्न-विनाशक बनना।
समय प्रमाण शक्तियों को यूज करना माना
ज्ञानी और योगी तू आत्मा बनना।

जो संकल्प करते हो उसे बीच-बीच में दृढ़ता का
ठप्पा लगाओ, तो विजयी बन जायेंगे।

व्यर्थ से बचना है तो
मुख पर दृढ़ संकल्प का बटन लगा दो।

परमात्म मुहब्बत के झूले में बैठ जाओ तो
मेहनत आपे ही छूट जायेगी।

माया के झूले को छोड़
अतीन्द्रिय सुख के झूले में सदा झूलते रहो।

सेकण्ड में संकल्पों को स्टॉप करने का अभ्यास ही
कर्मातीत अवस्था के समीप लायेगा।

सदा अचल स्थिति के आसन पर बैठने से ही
सतयुगी राज्य का सिंहासन मिलेगा।

अचल बनना है तो
व्यर्थ और अशुभ को समाप्त करो।

अज्ञान की शक्ति क्रोध है और
ज्ञान की शक्ति शान्ति है।

हर गुण वा ज्ञान की बात को
अपना निजी संस्कार बनाओ।

क्रोध ज्ञानी तू आत्मा के लिए महाशत्रु है।

क्रोध अग्नि रूप है जो खुद को भी जलाता है
और दूसरों को भी जला देता है।

अपने हाथ में लॉ उठाना भी क्रोध का अंश है।

ज्ञानी तू आत्माओं में क्रोध है तो इससे
परमात्मा के नाम की ग्लानि होती है।

बुराई की रीस को छोड़
अच्छाई की रेस करो।

किसी की कमजोरी देखने की आँखें बन्द कर
मन को अन्तर्मुखी बनाओ।

ज्ञान रत्नों, गुणों और दिव्य शक्तियों से खेलो,
मिट्टी से नहीं।

अब सब किनारे छोड़ घर चलने की तैयारी करो।

बड़े बाप के बच्चे हो इसलिए न तो छोटी दिल करो
और न ही छोटी बातों में घबराओ।

निर्मान बन निर्माण करो, कोमल नहीं बनो।

ज्ञान और योग से कमाल करो,
बातों की परवाह नहीं।

श्रेष्ठ भाग्य की रेखा खींचने की कलम है –
श्रेष्ठ कर्म।

श्रेष्ठ भाग्य की रेखाओं को
इमर्ज करो तो पुराने संस्कार की रेखायें
मर्ज हो ही जायेंगी।

रहमदिल बन सर्व गुणों और शक्तियों का
दान देने वाले ही मास्टर दाता हैं।

मनोबल से सेवा करो तो
उसकी प्रालब्ध कई गुणा ज़्यादा मिलेगी।

बेहद में रहो तो हद की बातें
स्वतः समाप्त हो जायेंगी।

स्वप्न व संकल्पों की पवित्रता ही
बड़े ते बड़ी पर्सनैलिटी है।

प्रसन्नचित्त बनो, प्रश्न-चित नहीं।

चलन और चेहरे की प्रसन्नता ही
रूहानी पर्सनैलिटी की निशानी है।

बेहद की सेवा में बिजी रहो तो
बेहद का वैराग्य स्वतः आयेगा।

सकाश देने की सेवा करो तो
समस्यायें सहज ही भाग जायेंगी।

प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना –
यह है दुआयें देना और दुआयें लेना।

असमर्थ आत्माओं को समर्थी दो तो
उनकी दुआयें मिलेंगी।

विश्वराजन बनना है तो
विश्व को सकाश देने वाले बनो।

नज़र से निहाल करने की सेवा करनी है तो
बापदादा को अपनी नज़रों में समा लो।

ग्लानि व डिस्ट्रबेन्श को सहन करना
और समाना अर्थात् अपनी राजधानी
निश्चित करना।

दूसरों को सहयोग देना ही
स्वयं के खाते जमा करना है।

साइलेन्स की शक्ति इमर्ज करो तो
सेवा की गति फास्ट हो जायेगी।

सैल्वेशन देने में ही लेना समाया हुआ है।

दिल से सेवा करो तो
दुआओं का दरवाजा खुल जायेगा।

परमात्म प्यार के सुखदाई झूले में झूलो तो
दुःख की लहर आ नहीं सकती।

कोई भी उत्सव मनाना अर्थात्
याद और सेवा के उत्साह में रहना।

तीसरा ज्वाला-स्वरूप नेत्र खुला रहे तो
माया शक्तिहीन बनती जायेगी।

परमात्म अवार्ड लेने के लिए
व्यर्थ और निगेटिव को अवाइड करो।

कथनी, करनी और रहनी एक करो।

समस्या स्वरूप नहीं, समाधान स्वरूप बनो।

निश्चय में ही विजय समायी रहती है।

सफलता पवित्र आत्माओं का
ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।

खुशी जैसी खुराक नहीं, चिंता जैसा मर्ज नहीं।

कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो।

सुख दो, सुख लो।
ना दुःख दो, ना दुःख लो।

सदा सन्तुष्ट रहो व सन्तुष्ट करो।

स्वयं प्रसन्नचित रहो वा
दूसरों को भी प्रसन्नचित करो।

बुरा मत सोचो, बुरा मत बोलो, बुरा मत करो।
बदला नहीं लो, बदल के दिखाओ।

जैसा करेंगे वैसा पायेंगे।

बोल में सदा सत्यता और
सभ्यता का बैलेन्स हो।

निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारे सोई।

सच्ची दिल पर साहेब राजी।

न डिस्टर्ब हो, ना डिस्टर्ब करो।

पाना था सो पा लिया, काम क्या बाकी रहा।

मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई।

अब नहीं तो कब नहीं।

विनाश काले प्रीत बुद्धि विजयन्ति।
विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति।

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि।

संग तारे कुसंग बोरे।

पर-चिन्तन पतन की जड़ है,
स्व-चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है।

सद्गुरु का निन्दक ठौर न पाये।

धरत परिये, धर्म न छोड़िये।

मांगने से मरना भला।

धैर्यता और प्रसन्नता परम औषधि हैं।

चिन्ता छोड़, प्रभु चिन्तन करो।

निश्चिन्तता से नव जीवन का आह्वान करो।

एकान्तप्रिय बनो तो बाह्यमुखता अच्छी नहीं लगेगी।

रोते हुए को हंसना सिखाना, गिरे हुए को
ऊपर उठाना यह सच्ची मानवता है।

क्रोध अनेक बीमारियों की जड़ है,
शान्ति सर्व श्रेष्ठ औषधि है।

धैर्यता, सहनशीलता और
विश्वास ही सफलता की चाबी है।

हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझने वाला ही
एवररेडी आत्मा है।

हाँ जी करने वाला ही दुआओं का पात्र है।

जैसा कर्म हम करेंगे, हमें देख और करेंगे।

सबसे बड़ा ज्ञानी वह है जो
आत्म-अभिमानी है।

जहाँ चाह है वहाँ राह मिल ही जाती है।

यह संसार हार और जीत का खेल है –
इसे नाटक समझ कर खेलो।

जो वस्तु बनती है वह ज़रूर बिगड़ती है,
उसमें अपनी अवस्था को मत बिगाड़ो।

अपनी इच्छा को कम कर दो तो
समस्या कम हो जायेगी।

फट से किसी का नुक्स निकालना ,
यह भी दुःख देना है।

अगर सद्गति चाहिए तो
ईश्वर से सद्मति लो।

साहस सभी गुणों का राजा है,
सन्तुष्टता सभी गुणों की रानी है।

अपने श्रेष्ठ कर्म से औरों की दुआयें लेना ही
सच्चे सुख और शान्ति का आधार है।

आओ हम सब मिलकर कर दें,
इस विश्व का रूप नया,
हर एक मानव में प्रेम जगे,
हर एक मानव में दया।

छोटे-छोटे फूल हैं हम और
किसी से नहीं हैं कम,
महकायें हर घर को हम,
दूर करें दुनिया के गम।

कितना सुन्दर कितना विराट्
होगा रचनाकार,
रचा है जिसने इतना सुन्दर
विशाल ये संसार।

तुम महान हो!
तुम्हारा जन्म महान कर्त्तव्य के लिए
ही हुआ है, अब अपने जीवन को सफल करो।

आपके शब्द कितने ही महान हों लेकिन आप अपने
कर्मों के द्वारा ही पहचाने जायेंगे।

हमारा सुन्दर भविष्य भाईचारे में है,
ना कि आपसी भेदभाव में।

हे दिलाराम बाबा!
ये दिल कहे बाबा तुझे देखता रहूँ।

अपने विचारों को चन्दन के समान
खुशबूदार बनाओ।

क्रोध मनुष्य के
उज्जवल भविष्य को बिगाड़ देता है।

शुद्ध संकल्प
हमारे जीवन का अमूल्य खज़ाना हैं।

हमारे संकल्प वही हों जिनसे
अपना और दूसरों का कल्याण हो।

राजयोग जीवन जीने की कला सिखाता है,
इससे मनोबल व आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

मधुरता व मुस्कान ही जीवन की
अनमोल निधि है।

सदा साथी भवः, सारथी भवः,
साक्षी द्रष्टा भवः।

अम्बर में आँख उठाये
मन तो उड़ता ही जाये,
संगम के सुहाने सुख, हम लूटें और लुटायें।

जीवन का सच्चा विश्राम आत्म-अनुभूति में है

संसार में भयंकर आँधी-तूफ़ान के समय
एक भगवान ही श्रेष्ठ रक्षक है।

प्रसन्नता ही जीवन का सबसे बड़ा खज़ाना है।

मीठे बच्चे! हर संकल्प में पुण्य जमा हो,
बोल में दुआयें जमा हों।

सम्बन्ध-सम्पर्क में दिल की दुआयें निकलें,
इसको कहते हैं सच्ची तपस्या।

बदले की भावना जीवन को
परेशानियों से भर देती है, इसे शुभ भावना में
बदलो तो जीवन सुखी हो जायेगा।

अन्तर्मन में ज्योति जगा लो होगा दूर अन्धेरा,
शिव का कर लो ध्यान आ रहा पावन पुण्य सवेरा।

विचारों की सुन्दरता के बल पर
तुम जो चाहो वह कर सकते हो लेकिन
इसके लिए मन की शक्ति को एकाग्र करो।

हर परिस्थिति में स्वयं को मोल्ड करने वाला
ही सच्चा गोल्ड बनता है।

आओ, हम लायें जगत में ऐसा परिवर्तन,
विश्व का हरेक घर-आंगन
बन जाये नन्दनवन।

स्वर्णिम सूरज चमक रहा है,
फूल-फूल मुस्काया, दूर नहीं अब देर नहीं,
सतयुग आया-कि-आया।

एक दिन बदलेगा विश्व ये सारा,
होगा इन्सानों में भाईचारा,
आपसी प्यार इतना बढ़ेगा,
कोई भी देश फिर न लड़ेगा।

विघ्नों से घबराना नहीं है,
विघ्न तुम्हें शक्तिशाली बनायेगा
इसलिए उन्हें ज्ञान और योग से पार करो।

माया के वार से बचने के लिए
योग रूपी कवच पहन कर रखो।

ड्रामा की ढाल सम्भाल लो तो
माया रूपी दुश्मन वार नहीं करेगा।

जाना है हमें अपने परमधाम,
जहाँ देह न है, न देह का ज्ञान।

बन करके हम
ज्ञान का सूरज, दुनिया को चमकायेंगे,
चन्दा-सा बन कर हम शीतलता बरसायेंगे।

मन की स्थिति इतनी मजबूत हो ,
जो कैसी भी परिस्थिति उसे पिघला न सके।

संगमयुग का एक सेकण्ड भी
एक वर्ष के समान है।

बहुत गई थोड़ी रही, थोड़ी भी अब जाये।
शिव कहे सुन आत्मा,
क्यों व्यर्थ समय गंवाये।

आत्मा-आत्मा भाई-भाई,
पावन दृष्टि इसमें समाई,
इस स्मृति में है सच्ची कमाई,
राजयोग की यही पढ़ाई।

दिव्य गुणों के फूल बनो रूहानी हो मुस्कान,
खुशबू फैले पवित्रता की,
आकर्षित हो भगवान।

कर्म का आधार वृत्ति है, वृत्ति श्रेष्ठ बनाओ तो
प्रवृत्ति स्वतः श्रेष्ठ हो जायेगी।

शिवबाबा का यही पैगाम,
जाना है सबको शान्तिधाम,

शान्ति है स्वधर्म तुम्हारा,
जन-जन को देना ये नारा।

सृष्टि कर्म क्षेत्र है, हार-जीत का खेल,
माया जीते स्वर्ग, हारे नर्क की जेल।

प्रभु का प्यारा वही बनता है
जो कमल समान न्यारा रहता है,
अतः संसार में रहो
लेकिन संसार आप में न रहे।

शिव सुखकर्त्ता है दुःखहर्त्ता कल्याणी कहलाये,
जन्म-जन्म की पतित आत्माओं को वो ही पावन बनाये।

सन्तुष्टता सभी गुणों की खान है,
प्रसन्नता उसकी पहचान है।

सच्चाई और सादगी रूपी सुमन,
मन मधुबन को सदा सुवासित रखते हैं।

ईश्वरीय खज़ानों को, स्वयं के कार्य में या
अन्य की सेवा के कार्य में जितना यूज़ करते
हो उतना ही खज़ाना बढ़ता है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम।

रोते हुए को हँसना सिखाना,
गिरे हुए को ऊपर उठाना -
यही सच्ची मानवता है।

स्वयं को और सर्व को प्रिय वही लगते हैं
जो सदा खुशहाल रहते हैं।

जिन्हें विश्व में पवित्रता की गंगा बहानी है
भला उन पर किसी की अपवित्रता का प्रभाव
कैसे हो सकता है!

रूप को न देख, रूह को देखो।

आपकी मुस्कराहट दूसरों के जीवन में
प्रकाश की किरणें बिखेरती है।

हथियारों से मानव को झुका सकते हैं,
मन को नहीं, मन को झुकाना है तो
प्रेम का प्रयोग करो।

एकरस अवस्था उनकी होगी
जो एक से सर्व सम्बन्धों का रस लेंगे,
वही अचल-अडोल बनेंगे।

प्रभु का प्यारा वही बनता है
जो कमलपुष्प समान न्यारा बनता है।

कर्मयोग की शिक्षा से करते कर्म महान,
दैवी गुणों की धारणा से बनते देव समान।

अपने श्रेष्ठ भाग्य द्वारा, भाग्य बनाने वाले
भगवान की स्मृति दिलाते रहो।

गोपी वल्लभ की सच्ची-सच्ची गोपिका ही
अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर सकती है।

अपने सन्तुष्ट, खुशनुमा जीवन से हर कदम
में सेवा करने वाले ही सच्चे सेवाधारी हैं।

परमात्म प्यार का अनुभव है तो
कोई भी रुकावट रोक नहीं सकती।

अपनी सेवा को बाप के आगे अर्पण करने
वाली आत्मा को ही
सेवा का फल और बल प्राप्त होता है।

'बाप और मैं'' यह छत्रछाया है तो
कोई भी विघ्न ठहर नहीं सकता।

हर परिस्थिति में सहनशील बनो तो
मौज का अनुभव करते रहेंगे।

बापदादा को नयनों में समाने वाले जहान के नूर ही,
बापदादा का साक्षात्कार कराने वाली श्रेष्ठ आत्मा है।

सदा एक बाप की कम्पनी में रहो और
बाप को अपना कम्पेनियन बनाओ यही श्रेष्ठता है।

सर्व प्राप्तियों से सदा सम्पन्न रहो तो
सदा हर्षित, सदा सुखी और खुशनसीब बन जायेंगे।

कर्म परछाई की तरह मनुष्य के साथ रहते हैं
इसलिए श्रेष्ठ कर्मों की शीतल छाया में रहो।

हर कर्म यथार्थ और युक्तियुक्त हो
तब कहेंगे सम्पूर्ण पवित्र आत्मा।

हम ऊँचे-से-ऊँचे पिता परमात्मा के बच्चे हैं, इस
शुद्ध नशे में रहो तो चलन बड़ी रॉयल रहेगी।

विस्तार में भी सार को देखने का अभ्यास करो तो
स्थिति सदा एकरस रहेगी।

सृष्टि की कयामत के पहले अपनी
कमजोरी और कमियों की कयामत करो।

अपने भाग्य और भाग्य विधाता बाप के गुण
गाते रहो तो सदा खुशी में रहेंगे।

इच्छा ही समस्याओं का कारण है,
इच्छाओं को कम करो तो
समस्यायें स्वतः ही कम हो जायेंगी।

कर्म करते स्व-स्मृति एवं
सेवा-निमित्त भाव से करो।

स्वार्थ भाव से परे रहना ही
परोपकारी बनना है।

ईर्ष्या नहीं, आशा के दीपक जगाओ।

जो कुछ हो गया, जो कुछ हो रहा है,
वही होना है वही सत्य है
इसलिए तुम उसकी चिन्ता मत करो।

जितनी अवस्था अच्छी होगी
उतनी व्यवस्था स्वतः सुन्दर होगी।

शुद्ध संकल्प ही
ब्राह्मणों की दिव्य बुद्धि का भोजन है।

इस संसार को
बेहतर बनाने का उत्तरदायित्व आपका है।

अपनी दिल को ऐसा विशाल बनाओ
जो स्वप्न में भी हद के संस्कार इमर्ज न हों।

आत्मा परमात्मा का मिलन ही
सर्व श्रेष्ठ मिलन है।

जहाँ हिम्मत और साहस है वहाँ कठिनाइयाँ व
समस्यायें स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

समय का पंछी उड़ता जाये ,
सबको ये पैगाम सुनाये,
हर पल की जो कीमत समझे,
अपना जीवन सफल बनाये।

पवित्र संकल्प ही बुद्धि का भोजन है,
पवित्रता ही आँखों की रोशनी है,
पवित्र कर्म ही निजी कर्म है।

तुम्हारी सम्पूर्णता का प्रकाश
सबके मन के अन्धकार को दूर करेगा।

आपकी शुभ वृत्ति ही दृष्टि को दिव्य बनाती है।

ब्राह्मण जीवन का शृंगार ही
दिव्यता और अलौकिकता है।

मुख से कड़ुवे वचन निकालने के बजाय
सदैव ज्ञान रतन ही निकालें।

ब्राह्मणों का निजी संस्कार है –
अटेन्शन और अभ्यास।

ऊँचे विचार और सद्व्यवहार वाला ही
इस जग में महान है।

सेवा और स्व पुरुषार्थ का बैलेन्स रखो तो
सहज ही मायाजीत बन जायेंगे।

बुद्धि बल से चरित्र बल बड़ा है,
पवित्रता का बल ही चरित्र बल है।

बन्धनमुक्त आत्मा ही जीवनमुक्त बन सकती है।

सम्पूर्ण पवित्रता ही
जीवन का सम्पूर्ण आनन्द है।

पवित्रता के बिना
श्रेष्ठ चरित्र की कल्पना व्यर्थ है।

पूछते हैं अपने दिल से, हम कितने महान हैं,
दुनिया जिसको ढूँढती है ,वो हम पर कुर्बान हैं।

तुम्हारा यह ईश्वरीय जीवन अनमोल है,
इसे कहीं भी उलझाओ मत।

रहमदिल बन कर दृष्टि को अलौकिक ,
मन को शीतल, बुद्धि को विशाल और
मुख को मधुर बनाने वाला ही महान है।

याद रखो, तुम भगवान के बच्चे हो।
उसके आज्ञाकारी बच्चे बन जाओ तो
सभी चिन्ताओं से बच जाओगे।

श्रेष्ठ वा निःस्वार्थ संकल्पों की सिद्धि,
अवश्य होती है।

पवित्रता मानव जीवन की श्रेष्ठ शक्ति
और अमर औषधि है।

बाबा बोले, आओ बच्चे! रूहानी बच्चे!
अपने मधुबन घर में तपस्या करो।

शिव भगवानुवाच!
मीठे बच्चे मधुबन घर से
मधुरता रूपी मधु साथ लेकर जाओ तो
सफलता सदा मिलती रहेगी।

प्यार से यज्ञ की सेवा करते
बाप के प्यार में समाये रहो।

जो आत्मायें ईश्वरीय सेवा में सदा हाँ जी करती हैं
उनके आगे सभी आत्मायें हाँ जी, हाँ जी करेंगी।

प्रिय वत्सो! दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति है पवित्रता
की, मन-वचन-कर्म की पवित्रता ही सच्चरित्रता है।

मीठे बच्चे! अपनी आत्मिक दृष्टि एवं
श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा सबको श्रेष्ठाचारी बनाओ।

एक बाप के हम बच्चे,
झगड़ा भला किस बात का,
स्वधर्म है शान्ति हमारा, भेद न करें जात का।

शान्ति से ही कर्म में कुशलता एवं व्यवहार में
शुद्धता का जन्म होता है।

रंग, जाति, धर्म ,भाषा का
दिल से भेद भुला दो, ओम् शान्ति के
महामंत्र से मन का मैल मिटा दो।

दैवी गुणों की धारणा ही सच्चा धर्म है, यही जीवन
का सच्चा श्रृंगार और मुख्य मर्यादा है।

धर्म सभी का शान्ति है, शान्तिधाम के हम
रहवासी, शान्ति सबको प्यारी है।

जागो, उठो हे आत्माओं, लूटो परमपिता का प्यार,
आज तुम्हारे द्वार खड़ा है जग का सृजनहार।

सुख-शान्ति सांसारिक साधनों में नहीं,
अपने सत्य स्वरूप को पहचानने में है।

मन का अन्धकार दूर करो तो
जग स्वतः ही प्रकाशित हो जायेगा।

मन प्रभु की अमानत है
इसलिए सदैव श्रेष्ठ संकल्प करो।

वैभवों के उपयोग से
आत्मा का तेज नष्ट हो जाता है
इसलिए मन में उपराम वृत्ति धारण करो।

एकाग्रता के अभ्यास से
सर्व शक्तियां स्वतः प्राप्त हो जाती हैं।

अब मुक्तिधाम चलना है इसलिए
स्वभाव-संस्कार सहित सब बातों से मुक्त बनो।

जिन्हें किसी भी बात का गम नहीं वही,
बेगमपुर के बेफिक्र बादशाह हैं।

शारीरिक मेहनत के साथ
रूहानियत का अनुभव करना ही श्रेष्ठता है।

अपनी अवस्था को ऐसा शान्तचित बना लो
जो क्रोध का भूत दूर से ही भाग जाये।

उदारता वा निराशा जीवन में अभिशाप हैं,
अपनी शक्तियों को जगाओ तो
इनसे मुक्त हो जायेंगे।

व्यर्थ की बीती बातों से सावधान होकर,
आगे स्वचिन्तन में मस्त रहो।

पुण्य कर्म ही विघ्न के समय
मनुष्य के सच्चे मित्र हैं।

सरल स्वभाव वालों का समय
व्यर्थ नहीं जाता है क्योंकि
वे भाव-स्वभाव से अलग रहते हैं।

बाबा ने तुम्हें ज्ञान-कलश प्रदान किया है,
इससे तुम स्वयं के व जग के
कलह-क्लेष मिटाओ।

माया से मूर्छित मनुष्यों को,
ज्ञान की संजीवनी बूटी से सुरजीत करो।।

नूरे रत्न! सबसे श्रेष्ठ व्यापार, अविनाशी ज्ञान रत्नों
का है क्योंकि ज्ञान का एक-एक रतन
करोड़ों रुपयों के समान है।

पानी की गंगा हिमालय से निकलती है परन्तु ज्ञान-
गंगा, ज्ञान सागर द्वारा आबू से निकलती है।

रूहानी बच्चे!
अविनाशी ज्ञान धन ही सच्चा धन है, इसकी धारणा
से आधाकल्प के लिए सुखी बन जायेंगे।

आत्मा के जन्म-जन्मान्तर के पाप धोने के लिए
नित्य ज्ञान-स्नान करो।

अविनाशी बच्चे! गुणग्राही बन कर गुण रूपी मोती
चुगने से सर्वगुण सम्पन्न बन जायेंगे।

पद्मापद्म भाग्यशाली बच्चे !
सदैव बुद्धि में ज्ञान का मनन-चिन्तन करते,
ज्ञान स्वरूप बन जायेंगे।

शिव भगवानुवाच!
ईश्वरीय ज्ञान ही सत्य ज्ञान है
इससे ही मुक्ति-जीवनमुक्त की प्राप्ति होती है।

हे ज्ञानी आत्मायें! सदैव अपने श्रेष्ठ कर्मों के
द्वारा सत्य बाप का साक्षात्कार कराना है।

शुभ चिंतक आत्मायें,कांटों के जंगल में भी
रूहे गुलाब की खुशबू फैलाती हैं।

कर्मों की ध्वनि, शब्दों से ऊँची है।

आत्म-परिवर्तन करो,
विश्व-परिवर्तन के लिए,
सर्व सुख त्याग दो, सबकी भलाई के लिए।

वे व्यक्ति अकेले नहीं हैं,
जिनके साथ सुन्दर विचार हैं।

ईश्वर साफ़ हाथों को देखता है,
भरे हुए हाथों को नहीं।

हमारी अच्छाई सबसे बड़ा धन है,
हमारी सहनशीलता ही हमारी महान धारणा है।

शिव भगवानुवाच!
फरियाद करने के बजाए तुम मुझे याद करो,
मेरा सहारा लो तो निश्चय ही कल्याण हो जायेगा।

यदि तुम इस अमूल्य समय को नष्ट करोगे तो
एक दिन आयेगा समय तुम्हें नष्ट कर देगा।

सत्य की नाव हिलेगी-डुलेगी
लेकिन डूब नहीं सकती।

ज्ञान-दान के साथ गुण-दान और
शक्तियों का दान भी करते जाओ।

मैं-पन और मेरा-पन का अधिकार छोड़ना ही
सम्पूर्ण नष्टोमोहा बनना है।

साधन निमित्त मात्र हैं,
साधना निर्माण का आधार है,
साधक का लक्षण धैर्यता एवं गम्भीरता है।

संकल्प, समय और शक्ति आपका
अनमोल खजाना है, इसका सावधानीपूर्वक
सद्-उपयोग कीजिए।

अध्यात्म का प्रकाश सम्पूर्ण परिवेश को
आलोकित कर सबको सरल कर देता है।

आप तपस्वीमूर्त आत्मा इस विश्व का प्रकाश
स्तम्भ हैं, आपके सुख, शान्ति, पवित्रता की
प्रखर किरणों से संसार प्रकाशित हो रहा है।

जीवन के अंधेरे से तुम क्यों घबराते हो,
भाग्य का सूर्य तो अंधकार में ही उदय होता है।

आप तपस्वीमूर्त आत्मायें इस जहान के नूर हो,
आप नूरों से ही जग का अन्धकार दूर होगा।

अपनी शक्तियों को पहचानो,
संसार तुम्हें पहचानेगा।

इन्द्रियों का आकर्षण ही सर्व दु:खों का कारण है।

प्रश्नों से पार प्रसन्नचित्त रहो।

संयम और ईश्वरीय नियम, मानव जीवन की शोभा है।

स्वचिन्तन उन्नति की सीढ़ी है,
परचिन्तन पतन की जड़ है।

पवित्रता ही सर्व समस्याओं का हल है।
सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य ही सम्पूर्ण अहिंसा है।

विजय धैर्यता में है ना कि अधैर्यता में है।

विश्व शान्ति भाई चारे के गीत
सदा हम गाते हैं, हर मानव के
मन-मन्दिर में प्रेम की ज्योति जगाते हैं।

शान्ति तुम्हारे गले का हार है और तुम्हारा
स्वधर्म भी शान्ति है, अब समय को पहचानो
और स्वयं को सुख-शान्ति से भरपूर करो।

प्रकृति को अपना मित्र बनाओ,
प्रकृति और स्वयं के समीप रहो तो
परमात्मा के समीप रहोगे।

सबका मालिक एक फिर क्यों बँटा हुआ
संसार है, सच पूछो तो
सारी दुनिया अपना ही परिवार है।

शुभ भावना के बोल
आपके, हीरे-मोती से भी मूल्यवान हैं।

अच्छे-से-अच्छे होकर चलना, कोई बड़ी बात
नहीं लेकिन जिसके साथ कोई चल नहीं
सकता उसके साथ चल कर दिखाना ही
सबसे बड़ी कला है।

मैं इस देह को चलाने वाली एक चैतन्य आत्मा हूँ,
हमारा स्वधर्म शान्ति और पवित्रता है।

ओम् शान्ति के सन्देश से
स्वयं को सच्चे स्वधर्म में स्थित कर दो।

शान्ति की शक्ति बढ़ाने के लिए अपना सम्बन्ध
शान्ति के सागर परमपिता परमात्मा से रखो।

दूसरों को देखने के बजाए स्वयं को देखो और याद
रखो जो कर्म हम करेंगे हमको देख और करेंगे।

हे मन, कर ले कर्म की तू पहचान, बीज तू बो ले
शुभ कर्मों के, कर्म हों ऊँच महान।

प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना -
यह है दुआयें लेना और दुआयें देना।

जो बात बीत चुकी उसे भूल जाओ, बीती बातों से
शिक्षा लेकर आगे के लिए सदा सावधान रहो।

दिव्य गुण धारण करो, याद की यात्रा करो,
पवित्र बनो और बनाओ।

पवित्रता मन-वचन-कर्म से अपनाना है।

मुक्ति-जीवनमुक्ति
आपका जन्म-सिद्ध अधिकार है।

निश्चय में ही विजय है। ज्ञान स्वरूप बनो।
प्रेम स्वरूप बनो। शक्ति स्वरूप बनो।

अपने को आत्मा समझ निरन्तर
मुझ पारलौकिक बाप को याद करो।

लाडले बच्चे, राजयोग द्वारा
जन्म जन्मान्तर के विकर्म विनाश होंगे।

तुम्हारा यह ईश्वरीय जीवन
हीरे-तुल्य जीवन है।
समय कम है, गफलत मत करो,
अविनाशी ज्ञान धन दान करो।

भारत सभी देशों में महान देश है,
आबू सभी तीर्थों में महान तीर्थ है।

जो व्यक्ति ईमानदार और सच्ची दिल वाला है,
वह हमेशा हल्का और मुक्त रहता है।

सरल स्वभाव, कार्य को सरल बना देता है।

जीवन में मधुरता का स्वाद अनुभव करने के लिए
बीती को भूलने की शक्ति चाहिए।

यदि मैं वर्तमान ठीक रखूँ तो आने वाले समय के
ठीक होने की सम्भावनायें बढ़ जाती हैं।

स्वयं की उन्नति में अधिक समय देंगे तो
दूसरों की निन्दा करने का समय नहीं मिलेगा।

जो सदा खुशी में रहते हैं,
उन्हें कभी भी अन्दर से आलस्य नहीं आता,
आलस्य बड़ा विकार है।

जब वायदे निभाना भूलते हो,
तब नजदीक के मित्र गंवाते हो।

आप समय को नहीं बदल सकते,
महसूस करें कि यह बदलने का समय है।

सकारात्मक विचारों की शक्ति से
सभी कार्यों में सफलता प्राप्त कीजिये।

यदि आप सिर्फ खुद का ही ख्याल करेंगे तो
और आपका ख्याल कम करेंगे।

औरों की गलतियाँ क्षमा करना और
भूलना ही महानता है।

पैर फिसलने के बाद ठीक हो सकता है,
जुबान फिसलने से गहरा घाव रह जाता है।

आँसू पोछे जा सकते हैं
लेकिन गुप्त आंसू घाव बन जाते हैं।

मनुष्यों के मन की एकरस स्थिति से
समाज में भी एकता दिखाई देती है।

क्रोध आने पर आत्मसंयम के अलावा
और भी बहुत कुछ गंवाते हैं।

जिन्दगी में आने वाली हर समस्या का सामना
करना ही है तो क्यों न प्रेम से करें।

दृढ़ता आपके गले में सफलता का हार पहनाती है।

यदि आप अपने सर्व कार्य में ईमानदार हैं, तो
आपके संकल्प, वाणी और कर्म में पूर्ण आत्म-
विश्वास की झलक दिखाई देगी।

जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं तो ख्याल रखें,
इच्छाएं आगे नहीं बढ़ती जायें।

कर्मेन्द्रियों पर पूरा अनुशासन ही
सच्ची विजय है।

अगर मनुष्य को
अपने अन्दर से शान्ति नहीं मिलती
तो क्या दुनिया में शान्ति हो सकती है?

एक बार
भगवान का अनुभव हो जाए तो और
किसी को ढूँढ़ने की जरूरत नहीं रहती है।

शीतलता और सहनशीलता
कमरे में वातानुकूल के समान हैं,
इससे कार्यक्षमता बढ़ती है।

अथक पुरुषार्थ और सहनशीलता
सफलता की कुंजी है।

अगर आप समय को बचायेंगे तो
समय आपको बचायेगा।

हम सब कहते हैं कि हम मानव जाति के हैं
लेकिन हम मानव दयालु कहाँ तक हैं।

स्वमान में रहने से और भगवान का स्नेही बनने से
दूसरे मनुष्यों की भी कदर कर सकते हैं।

हमेशा नम्रता का पोशाक पहनो तो
सबसे स्नेह और सहयोग मिलेगा।

आपकी अन्तरात्मा आपका अच्छा मित्र है,
उसकी बार-बार सुनें।

आप कह सकते हैं कि आपमें समझ है
लेकिन समझ कर्म से दिखाई देती है।

कुछ नया नहीं है,
इस स्मृति से स्थिरता का अनुभव करें।

दूसरों के विचारों को सम्मान दें,
तो वे आपके मददगार बन जायेंगे।
जब सब सम्बन्ध एक भगवान से हों,
तब अनेक प्राप्तियां उपलब्ध होती हैं।

याद रखें कि आप बहुत विशेष हैं।

आपको मिला हुआ कार्य
आप से अच्छा कोई नहीं कर सकता।

सादगी में बहुत सुन्दरता है,
जो चीज़ सादी है वह सत्य के नजदीक है।

अगर गलत कार्य को ही
सिद्ध करने की कोशिश करेंगे तो
समय आपकी मूर्खता पर हंसेगा।

दिव्य गुण भगवान के नजदीक लाते हैं लेकिन
अवगुण मनुष्य को भगवान से दूर कर देते हैं।

भाग्यशाली वह है जो दूसरों को देख उनकी
विशेषताओं से सीखता है, जलता नहीं।

जहाँ स्नेह नहीं है वहाँ शान्ति नहीं हो सकती,
जहाँ पवित्रता नहीं वहाँ स्नेह उत्पन्न नहीं होगा।

यदि मैं अपने सभी कार्य में ईमानदार हूँ तो
मुझे डर का अनुभव कभी भी नहीं होगा।

जो दूसरों से मिलजुल कर चलता है,
वही जीने की कला जानता है।

मन की अवस्था ऐसी हो
जो हर परिस्थिति में शीतल रहें।

अपशब्दों के प्रयोग का अर्थ यही है कि
मुझ में सही शब्द इस्तेमाल करने की बुद्धि नहीं है।

श्रेष्ठ और स्वच्छ स्पर्धा तन्दुरुस्ती की निशानी है।
ईर्ष्या घातक बीमारी है।

कभी-कभी जिन्दगी में इतने नकाब पहनते हैं कि
स्वयं को पहचानना मुश्किल हो जाता है।

यदि आप एक झूठ बोलते हैं तो उसके कारण कल
और भी झूठ बोलना पड़ेगा।

अगर मैं औरों की कमियां मन में रखता हूँ
तो वे शीघ्र ही मेरी बन जायेंगी।

यदि कोई आपका अपमान करता है तो
उस पर फूलों की, खुशियों की और
शुभ भावनाओं की वर्षा करो।

कोई भी कार्य करने के पहले
एक क्षण रुकें, सोचें उसका परिणाम
क्या होगा और फिर शुरू करें।

संसार में समस्यायें बढ़ने वाली हैं
इसलिए उनसे निपटने की क्षमता
स्वयं में बढ़ानी होगी।

आवश्यकताओं के लिए धन कमाना अच्छा है
अधिक धन की भूख मानव को
नीचे गिराती है।

ज़्यादा महत्त्वपूर्ण क्या है - आपके रहने का
तरीका या सही तरीके से रहना।

डंडे और पत्थरों से हड्डियां टूट जाती हैं
लेकिन शब्दों से अक्सर रिश्ते टूट जाते हैं।

जागृत होने के बाद ही महसूस होता है कि
हम सो रहे थे।

याद रखें, माँ-बाप की चाल-चलन
बच्चों के लिए शिक्षा का माध्यम होती है।

अगर आप बीते हुए समय में ही रहते हैं तो
वर्तमान समय में भविष्य कैसे देखेंगे।

यदि मैं सच्चाई से सदा छिपता रहूँ तो इसका अर्थ है
कि मुझे झूठ का संग अच्छा लगता है।

स्वतंत्रता की कीमत जिम्मेवारी है।

आत्म विश्वास सबसे बड़ी सम्पदा है।

ज्ञान और योग से कमाल करने वाले बनो,
बातों की परवाह करने वाले नहीं।

खुशी जीवन की अनमोल निधि है।

निर्भयता और शुभ आशाएं ही जीवन को
उन्नति के पथ पर ले जाने के साधन हैं।

शुभ एवं श्रेष्ठ विचारों वाला ही
सम्पूर्ण स्वस्थ प्राणी है।

शीतल चित्त और मधुर वाणी की वीणा से
परमात्म प्यार झंकृत होता है।

सादा भोजन उच्च विचार,
स्वस्थ तन-मन का आधार।

सादगी एवं सच्चाई के सुन्दर सुमन मन
मधुबन को सदा सुवासित रखते हैं।

आत्म-चिन्तन और प्रभु चिन्तन
योगी जीवन के आभूषण हैं।

शुभ चिन्तन अमृत है,
निष्प्राण जीवन के लिए आशा की धड़कन है।

चिता तो मुर्दे को जलाती है किन्तु चिन्ता तो
जिन्दों को भी जलाती है।

चिन्ता छोड़ प्रभु चिन्तन करो,
निश्चिन्तता से नव-जीवन का आह्वान करो।

प्रभु के प्रति समर्पणमयता ही
निश्चिन्तता का आधार है।

स्वस्थ तन-मन से स्वच्छ जीवन मुस्कायेगा।

शुभ विचार से सुखद संसार भू पर आयेगा।

नैतिकता और सच्चरित्रता ही समाज का सच्चा बल है।

''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की
मंगलमय अवधारणा में
सुख का साम्राज्य है।

श्रम सबसे बड़ा धर्म है,
सौभाग्य की किरण है।

प्रेम एकता एवं सहयोग के सोपान में
आरूढ़ होने से ही स्वर्ग में प्रवेश मिलता है।

विनम्रता एवं मुस्कान में
सर्व का सम्मान संचित है।

पवित्रता ही परमात्म औषधालय है,
धैर्यता एवं प्रसन्नता औषधि है।

रोग निदान मायूसी में नहीं मुस्कराहट में है।

सबसे सुन्दर उपचार तो सात्विक विचार हैं।

नम्रता का गुण धारण कर लो तो सब नमन करेंगे।

स्नेह एवं मुस्कान ही
चिकित्सक की प्रथम चिकित्सा है।

बेहतर है बीमारी आने न पाये,
आ भी जाये तो चेहरा मुरझाने न पाये।

निर्मल मुस्कान तो ईश्वरीय वरदान है,
जीवन का प्राण है।

''दया'' ही मानव का मूल धर्म है।

''प्रसन्नता'' मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ शृंगार है।

आत्म विश्वास सबसे बड़ा बल है।

अपने विचार चन्दन के समान
खुशबू देने वाले श्रेष्ठ एवं महान बनाओ।

सदा मुस्कराते रहो।

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेम,
पवित्रता और दिव्य बुद्धि को साथ लेकर चलो।

घृणा को प्रेम में,
द्वेष को अनुराग में, अन्धकार को प्रकाश में
बदल देना ही मानवता है।

निश्चयवान कभी हारता नहीं, थकता नहीं,
गिरता नहीं। यही आदर्श व्यक्तित्व की पहचान है।

जैसा अन्न वैसा मन, वैसा ही बनता जीवन।

महान पुरुष समस्याओं को देख रुकते नहीं,
आगे बढ़ते हैं।

उदासी व निराशा जीवन में अभिशाप है।
अपनी सर्वशक्तियों को जगाओ तो
इनसे मुक्त हो जाओगे।

प्रभु प्यार में इतनी तल्लीनता हो,
जो सर्व शारीरिक कष्ट भूल जायें।

परीक्षायें ही मनुष्य को मजबूत बनाती हैं।

कर्मभोग पर विजयी बनने का साधन है - योगबल।

महान बनने के लिए स्वयं को मेहमान समझो।

परमात्म ज्ञान रूपी घृत साथ हो तो
खुशी का दीपक सदा जगा रहेगा।

सभी की चिन्ताओं को मिटाने वाले
शुभ चिंतक बनो।

धैर्यता, विश्वास और
सहनशीलता ही सफलता की कुंजी है।

यदि शरीर बीमार है तो
मन को भी बीमार मत करो।

सहानुभूति से ही सेवा-भाव जागृत होता है।

मन की उलझन समाप्त कर
वर्तमान एवं भविष्य उज्ज्वल बनाओ।

आलस्य को समाप्त करने के लिए
सदा उमंग-उल्लास में रहो।

याद रखें
शरीर से ज्यादा मूल्यवान आपकी खुशी है।

जीते जी ज्ञान का दीपक जगाओ तो
आत्मा भटकेगी नहीं।

ईश्वर से बुद्धि की लगन लगाना ही
ईश्वर का सहारा लेना है।

दृष्टि को शुद्ध, मन को शीतल,
बुद्धि को रहमदिल और
मुख को मृदु बनाओ।

आवाज़ से परे अपनी
शान्त स्वरूप स्थिति का अनुभव करो।

शान्त स्वरूप स्थिति में रहने वाले को ही
अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है।

शरीर को भोजन देने के साथ-साथ आत्मा को भी
ईश्वरीय स्मृति का भोजन दो।

शुद्ध संकल्प हमारे जीवन का अनमोल खजाना है।

हर कार्य में साहस को साथी बनाओ तो
सफलता अवश्य मिलेगी।

समस्यायें प्रभु-अर्पण कर दो तो
हर समस्या समाप्त हो जायेगी।

कर्मेन्द्रियों पर राज्य करने वाला ही सच्चा राजा है।

नफरत के नहीं, प्रेम के दीप जगाओ।

निर्भयता व आत्म विश्वास ही
मरीज की सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

''ब्रह्मचर्य सबसे बड़ा टॉनिक है।

अपनी समस्याओं का
धैर्यता से सामना करो।

मनुष्य जीवन की सार्थकता
महान कर्म करने में है।

विपत्तियों को सहने का बल
केवल ईश्वर की याद से ही मिलता है।

जीवन की हर सीढ़ी पर
धैर्यता से कदम रखो।

विघ्नों से डरो मत,
क्योंकि विघ्न ही आत्मा को
बलवान बनाते हैं।

उपकार, दया और क्षमा –
यह मानव के परम कर्त्तव्य हैं।

कभी भी प्रकृति अर्थात् शरीर के दास नहीं बनना,
दास बनने से उदास हो जायेंगे।

समस्याओं के मझधार में
केवल एक परमात्मा को ही याद करो।

ज्ञानयुक्त प्रेम ही यथार्थ प्रेम है।

खुशी के खज़ाने को सदा साथ रखो तो
मन का रोना समाप्त हो जायेगा।

बुरी आदत के सामने झुकने से व्यक्ति अपने ऊपर
राज्य करने के अधिकार को खो देता है।

आत्म विश्वास में सच्चा सुख है।

सद्व्यवहार और परोपकार
सर्व कलाओं में सर्वश्रेष्ठ कलाएँ हैं।

सद्व्यवहार से मनुष्य महान बनता है।

अपने श्रेष्ठ कर्म वा श्रेष्ठ चलन द्वारा दुआयें
जमा कर लो तो पहाड़ जैसी बात भी रुई के
समान अनुभव होगी।

हर कर्म का बीज संकल्प है,
इसलिए अच्छे शुद्ध संकल्प के बीज बोने से
फल अच्छे निकलेंगे।

यदि देखना है तो
दूसरे की विशेषताओं को देखो और
कुछ छोड़ना है तो कमजोरियों को छोड़ो।

कार्य-व्यवहार में सत्यता है तो किसी भी
प्रकार का भय उत्पन्न नहीं हो सकता।

सावधान!
आपके सर्व भाव, प्रभाव डालने वाले हैं।

हमारे संकल्पों की क्वालिटी हमारी
व्यक्तिगत खुशी की डिग्री को दर्शाती है।

संकल्पों की शुद्धि ही सच्ची तन्दुरुस्ती है।

मुस्कराहट ही चेहरे की सच्ची सुन्दरता है।

नैतिकता तथा दिव्यता दो अमूल्य रत्न हैं
जो मनुष्य को सुन्दरता प्रदान करते हैं।

समय ही जीवन है,
समय को गंवाना माना जीवन को गंवाना।

यदि मौत का भय है तो अभी तक
जीवन के महत्त्व को समझा नहीं है।

भगवान में विश्वास रखना माना
भय से मुक्ति पाना।

दूसरों द्वारा स्नेह और सहयोग
प्राप्त करने का आधार है – नम्रता।

साइलेन्स मन और तन को आराम देती है
और कभी-कभी केवल आराम रूपी दवाई
की ही आवश्यकता होती है।

निश्चिंतता और सहनशीलता
मन की कार्य-क्षमता को बढ़ा देती है।

आशा और विश्वास के रथ पर सवार हो
जाओ तो मन रुपी घोड़े
आपके नियन्त्रण में रहेंगे।

बुद्धिमान सोच-विचार करके ही कोई काम
करते हैं, पर मूर्ख पहले काम करते हैं
और फिर विचार करते हैं।

सत्कर्म ही मनुष्य के सच्चे साथी हैं,
जो मृत्यु के बाद भी साथ देते हैं।

आत्म संयमी मनुष्य ही
अनन्त सुख को प्राप्त करते हैं।

अपवित्र विचार मनुष्य को बरबाद कर देते हैं।

जिनके मन में गन्दे विचार हैं,
उन्हें आगे बढ़ने की आश कभी नहीं करनी चाहिए।

यदि आपका आचार-विचार पवित्र है तो आपका हृदय
प्रसन्नता और आनन्द से लबालब भरा रहेगा।

भय सदा अज्ञानता से उत्पन्न होता है।

मृत्यु से जितना कष्ट नहीं होता,
उससे अधिक कष्ट बुजदिली से होता है।

आत्मा को जान लेने से मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता।

ब्रह्मचर्य रूपी तपोबल से
विद्वान लोगों ने मृत्यु को जीता है।

चिकित्सा की अपेक्षा रोगों से बचाव श्रेष्ठ है।

धैर्य और विश्वास के साथ प्रयास करते रहेंगे
तो निश्चित ही परिणाम भी अच्छे होंगे।

अन्तर्ज्ञान के पवित्र सरोवर में जीवन का
परम आनन्द निहित है।

बुद्धिमानों का समय सत्साहित्य,
सुकर्म एवं सुसंग में व्यतीत होता है,
जबकि मूर्ख का सोने,
खोने और पछताने में।

सुबह उठते समय और रात को सोते समय
ईश्वर की आराधना अवश्य करें, इससे
मनोबल और आत्मबल में वृद्धि होती है।

सदा सबके प्रति प्रेम से रहना ही,
सच्चा जीवन व्यतीत करना है।

आपके जीवन में जो क्षण व्यतीत हो रहे हैं उन्हें सादे और मीठे, पवित्र और सुन्दर, श्रेष्ठ और आशापूर्ण, उच्च और दृढ़, नम्र और प्रेममय विचारों से भरो।

विचारों से ही हम उठते हैं और
विचारों से ही हम गिरते हैं।

अपने आपको दुर्विचारों से मुक्त रखो।

घबराना तथा शिकायत करना, अज्ञान वा आध्यात्मिक अन्धकार के चिन्ह हैं।

शरीर अमर आत्मा का पवित्र मंदिर है अतः शरीर को आत्मा के अनुरूप ही अच्छा बनाना चाहिए।

डांवाडोल हृदय वाले और
अस्थिर चित्त आदमी सदा असफल होते हैं।

सफलता की पहाड़ी की चोटी पर पहुँचने के लिए दृढ़ निश्चय, साफ़ हृदय और पूर्ण उत्साह के साथ कदम बढ़ायें।

अपने आपको तुच्छ समझना ही आत्म पतन का कारण है।

क्रोध अग्नि रूप है जो खुद को भी जलाता है और दूसरों को भी जला देता है,
इसलिए इससे मुक्त बनो।

सच्चे दिल से दाता, विधाता, वरदाता को राज़ी करने वाले ही रूहानी मौज में रहते हैं।

समय को गिनती करने वाले नहीं बनो लेकिन बाप के वा स्वयं के गुणों की गिनती कर सम्पन्न बनो।

आप परमात्मा के बच्चे हो इसलिए न तो छोटी दिल करो, न छोटी बातों में घबराओ।

आपके पास श्रेष्ठ भाग्य की रेखा खींचने का कलम
है ''श्रेष्ठ कर्म''।

चलन और चेहरे की
प्रसन्नता ही सन्तुष्टता की निशानी है।
असमर्थ आत्माओं को समर्थी दो तो
उनकी दुआयें मिलेंगी।

ग्लानि को सहन करना और
समाना यही आपकी महानता है।

दूसरों को सहयोग देना ही
उन्हें अपना सहयोगी बनाना है।

दिल से दूसरों की सेवा करो तो
दुआओं का दरवाजा खुल जायेगा।

सदा उत्साह में रहना और दूसरों को उत्साह
दिलाना यह अपना आक्यूपेशन बना लो।

विकारों रूपी माया से निर्भय बनो और
आपसी सम्बन्धों में निर्माण बनो।

परेशान को अपनी शान में स्थित कर देना
ही सबसे अच्छी सेवा है।

अब मुक्तिधाम घर चलना है इसलिए
कर्मबन्धनों से मुक्त बनो और बनाओ।

परमात्म-स्नेह का अनुभव कर
उसमें समाये रहो तो मेहनत से मुक्त हो जायेंगे।

कोई भी कार्य डबल लाइट बन कर करो तो
मनोरंजन का अनुभव करेंगे।

सर्व प्राप्ति के साधन होते भी
वृत्ति उपराम रहे तब कहेंगे वैराग्य वृत्ति।

सुख स्वरूप बन कर सुख दो तो
आपके खाते में दुआयें एड हो जायेंगी।

युक्तियुक्त बोल वे हैं जो मधुर और
शुभ भावना सम्पन्न हैं,
ऐसे बोल ही सिद्ध होते हैं।

ट्रस्टी वह है जिसमें सेवा की शुद्ध भावना है।

विघ्न रूप नहीं, विघ्न विनाशक बनो तो
पूज्य बन जायेंगे।

अन्तर्मुखी वह है
जो व्यर्थ संकल्पों से मन का मौन रखता है।

किसी भी श्रेष्ठ कार्य के निमित्त बनो तो उस कार्य की
सफलता का हिस्सा आपको मिल जायेगा।

आपको कोई अच्छा दे या बुरा – आप सबको स्नेह
दो, सहयोग दो, रहम करो।

निगेटिव वा व्यर्थ सोचने का रास्ता बन्द कर दो तो
सफलता स्वरूप बन जायेंगे।

बिना त्याग के भाग्य नहीं मिलता
इसलिए त्यागमूर्त बनो।

एक परमात्मा के प्यारे बनो तो
विश्व के प्यारे बन जायेंगे।

मन और बुद्धि कन्ट्रोल में हो तो
स्थूल सभी कर्मेन्द्रियां कन्ट्रोल में
आ जायेंगी।

अभिमान व अपमान – इन दो बातों का
त्याग कर निर्माण बनो, सम्मान दो।

अपने गुण वा विशेषताओं का अभिमान न हो
तब कहेंगे सच्चे ज्ञानी।

अपने संकल्पों को शुद्ध, ज्ञान स्वरूप बना
कर कमजोरियों को समाप्त करो।

अब समस्या स्वरूप नहीं,
समाधान स्वरूप बनो।

दिल में परमात्म-प्यार वा शक्तियाँ समाई हुई हों तो
मन में उलझन आ नहीं सकती।

क्रोध मुक्त बनना है तो निःस्वार्थ भावना रखो,
इच्छाओं के रूप का परिवर्तन करो।

अपवित्रता परधर्म है, पवित्रता सच्चा स्वधर्म है,
इसलिए स्वधर्म को धारण करो।

किसी की बुरी वा अच्छी बात सुन कर संकल्प में भी घृणा
भाव न आये तब कहेंगे महान आत्मा।

अपनी गलती दूसरे पर लगाना –
यह भी परचिन्तन है, इससे मुक्त बनो।

अपनी सूक्ष्म कमजोरियों का चिन्तन करके उन्हें
मिटा देना – यही स्वचिन्तन है।

कमजोर संस्कार ही
माया वा विकारों के आने का चोर गेट है।

सर्वशक्तिवान को अपना साथी बना लो तो
पश्चाताप से छूट जायेंगे।

समय पर दुःख और धोखे से बच कर
सफल होने वाला ही ज्ञानी है।

निमित्त और निर्माणचित्त –
यही आप सच्चे सेवाधारी का लक्षण है।

जैसा समय वैसा अपने को मोल्ड कर लेना
– यही है रीयल गोल्ड बनना।

सहन करना है तो खुशी से करो,
मजबूरी से नहीं, तब कहेंगे सहनशील।

कोई भी इच्छा, अच्छा बनने नहीं देगी
इसलिए इच्छा-मात्रम्-अविद्या बनो।

इच्छायें परछाई के समान हैं आप पीठ कर
दो तो पीछे-पीछे आयेंगी।

व्यर्थ बोलना अर्थात्
अनेकों को डिस्टर्ब करना, व्यर्थ वा डिस्टर्ब करने
वाले बोल से मुक्त बनो।

हर आत्मा को कोई न कोई प्राप्ति कराने वाले
वचन ही सत वचन हैं।

एक-दो को देखने के बजाए
स्वयं को देखो और परिवर्तन करो।

तन की बीमारी कोई बड़ी बात नहीं
लेकिन मन कभी बीमार न हो।

एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ तो
मन-बुद्धि का भटकना बंद हो जायेगा।

योग की अनुभूति करनी है तो
दृढ़ता की शक्ति से मन को कन्ट्रोल करो।

अनेकता में एकता लाना, बिगड़ी को बनाना
– यह सबसे बड़ी विशेषता है।

सच्चे सेवाधारी वह हैं
जिनका कहना और करना समान हो।

मन को वश में करने वाला ही
मन्मनाभव रह सकता है।

स्वराज्य-अधिकारी बनना है तो मन रूपी
मन्त्री को अपना सहयोगी बना लो।

अन्दर की अशुद्धि ही
सम्पूर्ण शुद्ध बनने में विघ्न डालती है।

जहाँ स्वार्थ है वहाँ ही मोह है
इसलिए सेवा अर्थ स्नेह रखो,
स्वार्थ से नहीं।

शुभचिन्तन द्वारा
निगेटिव बातों को पॉजेटिव में परिवर्तन करो।

किसी भी प्रकार की हलचल में दिलशिकस्त होने के
बजाए बड़ी दिल वाले बनो।

मन की उलझन को समाप्त करने के लिए
निर्णय शक्ति को बढ़ाओ।

जहाँ मेरा-पन आता है वहाँ बुद्धि का फेरा हो जाता है,
इसलिए मेरे को तेरे में परिवर्तन करो।

स्व-स्थिति शक्तिशाली है तो
परिस्थिति उसके आगे कुछ भी नहीं है।

पहले सोचना फिर करना –
यही ज्ञानी तू आत्मा का गुण है।

समय और संकल्प के खजाने की बचत कर
जमा का खाता बढ़ाओ।

शुभ भावना, शुभ कामना के श्रेष्ठ संकल्प ही
जमा का खाता बढ़ाते हैं।

सर्वशक्तिवान को साथी बना लो तो
सफलता चरणों में आ जायेगी।

सत्यवादी वह है
जिसके चेहरे और चलन में दिव्यता हो।

सत्यता की शक्ति को धारण करने के लिए
सहनशील बनो।

सत्य, समय प्रमाण स्वयं सिद्ध होता है,
उसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं।

दिव्य गुणों के आधार पर
मन-वचन और कर्म करना ही दिव्यता है।

अच्छाई धारण करो
लेकिन अच्छाई में प्रभावित नहीं हो जाओ।

रहमदिल बन सेवा द्वारा निराश और
थकी हुई आत्माओं को सहारा दो।

सदा प्रसन्नचित रहो तो
सब प्रश्न समाप्त हो जायेंगे।

नॉलेजफुल बन व्यर्थ प्रश्नों को स्वाहा कर दो तो
समय बच जायेगा।

आपके जीवन का श्वास खुशी है,
शरीर भल चला जाए लेकिन खुशी न जाए।

श्रेष्ठ संकल्प का एक कदम आपका और
सहयोग के हज़ार कदम परमात्मा के।

एकान्तप्रिय बनो तो
बाह्यमुखता अच्छी नहीं लगेगी।

नम्रता का गुण धारण कर लो तो
सब नमन करेंगे।

मधुरता रूपी मधु साथ रहे तो
सफलता होती जायेगी।

कदम-कदम में पदमों की कमाई जमा
करने वाला ही सबसे बड़ा धनवान है।

सेवा द्वारा सर्व की दुआयें प्राप्त करना -
यह आगे बढ़ने की लिफ्ट है।
ज्ञानी तू आत्मा वह है जो महीन और
आकर्षण करने वाले धागों से भी मुक्त है।

जीवनमुक्त के साथ देह से न्यारे विदेही
बनना - यह है पुरुषार्थ की लास्ट स्टेज।

परिस्थितियों की हलचल के प्रभाव से बचना है तो
विदेही स्थिति में रहने का अभ्यास करो।

कोई भी प्लैन विदेही, साक्षी बन सोचो और
सेकण्ड में प्लेन स्थिति बनाते चलो।

लास्ट समय का सोचने के बजाए
लास्ट स्थिति का सोचो।

सेवा और स्थिति का बैलेन्स रखो तो
सर्व की ब्लैसिंग मिलती रहेंगी।

अभी दुआओं के खाते को सम्पन्न बना लो तो
आपके चित्रों द्वारा
सबको अनेक जन्म दुआयें मिलती रहेंगी।

विदेही स्थिति में रहो तो
परिस्थितियां सहज पार हो जायेंगी।

बाप समान अव्यक्त वा विदेही बनना -
यही अव्यक्त पालना का प्रत्यक्ष सबूत है।

जहाँ उमंग-उत्साह और एकमत का संगठन है,
वहाँ सफलता समाई हुई है।

खुशी आपका स्पेशल खजाना है,
इस खज़ाने को कभी नहीं छोड़ना।

सूर्यवंशी बनना है तो सदा विजयी और
एकरस स्थिति बनाओ।

नम्बरवन में आना है तो
सिर्फ ब्रह्मा बाप के कदम-पर-कदम
रखते चलो।

ब्रह्मा बाप समान बनना अर्थात्
सम्पूर्णता की मंजिल पर पहुँचना।

बाप समान अव्यक्त रूपधारी बन प्रकृति के
हर दृश्य को देखो तो हलचल में नहीं आयेंगे।

प्रकृतिपति की सीट पर सेट होकर रहो तो
परिस्थितियों में अपसेट नहीं होंगे।

सम्पन्नता की स्थिति में स्थित हो,
प्रकृति की हलचल को, चलते हुए
बादलों के समान अनुभव करो।

व्यक्त में रहते अव्यक्त फ़रिश्ता बन कर
सेवा करो तो विश्व-कल्याण का कार्य
तीव्रगति से सम्पन्न हो।

डबल लाइट फ़रिश्ता बनना है तो
व्यर्थ और निगेटिव के बोझ से हल्के बनो।

आपकी विशेषतायें वा गुण प्रभु प्रसाद हैं,
उन्हें मेरा मानना ही देह-अभिमान है।

मेरे-मेरे के झमेलों को छोड़
बेहद में रहो तब कहेंगे विश्व कल्याणकारी।

मेरे-पन के अनेक रिश्तों को
समाप्त करना ही फ़रिश्ता बनना है।

सदा बेहद की वृत्ति, दृष्टि और स्थिति हो
तब विश्व कल्याण का कार्य सम्पन्न होगा।

निगेटिव को पॉजिटिव में चेंज करने के लिए
अपनी भावनाओं को शुभ और बेहद की बनाओ।

बातों को देखने के बजाए
स्वयं को और बाप को देखो।

किसी विशेष कार्य में मददगार बनना ही
दुआओं की लिफ्ट लेना है।

निमित्त बन यथार्थ पार्ट बजाओ तो
सर्व के सहयोग की मदद मिलती रहेगी।
विदेहीपन का अभ्यास ही
अचानक के पेपर में पास करायेगा।

सेकण्ड में विदेही बनने का अभ्यास हो तो
सूर्यवंशी में आ जायेंगे।

मन-बुद्धि को कन्ट्रोल करने का अभ्यास हो
तब सेकण्ड में विदेही बन सकेंगे।

देह और देह के साथ पुराने स्वभाव,
संस्कार वा कमजोरियों से न्यारा होना ही
विदेही बनना है।

दिल से, तन से, आपसी प्यार से सेवा करो तो
सफलता निश्चित मिलेगी।

स्व-पुरुषार्थ वा विश्व-कल्याण के कार्य में जहाँ
हिम्मत है वहाँ सफलता हुई पड़ी है।

कोई भी कार्य शुरू करने के पहले
विशेष यह स्मृति इमर्ज करो कि सफलता मुझ
श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा का जन्म-सिद्ध अधिकार है।

जहाँ निश्चय है वहाँ विजय के तकदीर की लकीर
मस्तक पर है ही।

''कल्प-कल्प का विजयी हूँ'' – यह रूहानी नशा
इमर्ज हो तो मायाजीत बन जायेंगे।

निगेटिव और वेस्ट को समाप्त कर
मेहनत मुक्त बनो।

बीती को बिन्दी लगा कर हिम्मत से आगे
बढ़ो तो बाप की मदद मिलती रहेगी।

जो ड्रामा के राज़ को नहीं जानता है
वही नाराज़ होता है।

फ्राखदिल बन चेहरे और चलन से
गुण व शक्तियों की गिफ्ट बाँटना ही
शुभ भावना, शुभ कामना है।

शुभ भावना के स्टॉक द्वारा
निगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन करो।

इस समय दाता बनो तो आपके राज्य में
जन्म-जन्म हर आत्मा भरपूर रहेगी।

विश्व-राज्य अधिकारी बनना है तो
विश्व परिवर्तन के कार्य में निमित्त बनो।

आप हीरे-तुल्य आत्माओं के बोल भी
रत्न समान मूल्यवान हों।

जब बोल में स्नेह और संयम हो
तब वाणी की एनर्जी जमा होगी।

संकल्प, बोल, समय, गुण और शक्तियों के खज़ाने जमा
करो तो इनका सहयोग मिलता रहेगा।

ज़्यादा बोलने से दिमाग की एनर्जी कम हो जाती है
इसलिए शार्ट और स्वीट बोलो।

अब आप ब्राह्मण आत्मायें माइट बनो और
दूसरी आत्माओं को माइक बनाओ।

बाप से इनाम लेना है तो स्वयं से और
साथियों से निर्विघ्न रहने का सर्टिफिकेट साथ हो।

सेवाओं से जो दुआयें मिलती हैं,
यही सबसे बड़े से बड़ी देन हैं।

सर्व के दिल की दुआयें लेते चलो तो
आपका पुरुषार्थ सहज हो जायेगा।

जैसे बाप जी-हाज़िर कहते हैं
वैसे आप भी सेवा में जी हाज़िर,
जी हज़ूर करो तो पुण्य जमा हो जायेगा।

वारिस वह है जो एवररेडी बन
हर कार्य में जी हज़ूर हाज़िर कहता है।

बाप से वरदान प्राप्त करने का
सहज साधन है – दिल का स्नेह।

बिखरे हुए स्नेह को समेट कर एक बाप से
स्नेह रखो तो मेहनत से छूट जायेंगे।

स्नेह के स्वरूप को
साकार में इमर्ज कर ब्रह्मा बाप समान बनो।

अव्यक्त स्थिति में स्थित हो मिलन मनाओ
तो वरदानों का भण्डार खुल जायेगा।

ऊँची स्थिति में स्थित हो सर्व आत्माओं को रहम की दृष्टि दो, वायब्रेशन फैलाओ।

निर्विघ्न रहना और निर्विघ्न बनाना – यही सच्ची सेवा का सबूत है।

सर्व का प्यारा बनना है तो खिले हुए रूहानी गुलाब बनो, मुरझाओ नहीं।

ब्राह्मण जीवन में युद्ध करने के बजाए मौज मनाओ तो मुश्किल भी सहज हो जायेगा।

ब्रह्माचारी वह है जिसके हर संकल्प, हर बोल में पवित्रता का वायब्रेशन समाया हुआ है।

हर कर्म में, कर्म और योग का अनुभव होना ही कर्मयोग है।

वाणी के साथ चलन और चेहरे से
बाप समान गुण दिखाई दें तब प्रत्यक्षता होगी।

हर एक बच्चा बाप समान प्रत्यक्ष प्रमाण बने तो
प्रजा जल्दी तैयार हो जायेगी।

बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा इच्छाओं के वश
परेशान आत्माओं की परेशानी दूर करो।

साधनों का प्रयोग करते साधना को बढ़ाना ही
बेहद की वैराग्य वृत्ति है।

समय की समीपता प्रमाण सच्ची तपस्या वा
साधना है ही बेहद का वैराग्य।

दुआओं का खाता जमा करने का साधन है –
सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना।

बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल हो तो
सहयोगी, सहज योगी बन जायेंगे।

लाइट हाउस बन
मन-बुद्धि से लाइट फैलाने में
बिज़ी रहो तो किसी बात में भय नहीं लगेगा।

साइंस के साधनों को यूज़ करो
लेकिन अपने जीवन का आधार नहीं बनाओ।
बापदादा के डायरेक्शन को क्लीयर कैच
करने के लिए मन-बुद्धि की लाइन
क्लीयर रखो।

दिल की सच्चाई-सफाई हो तो
साहेब राज़ी हो जायेगा।

सेकण्ड में अपने को विदेही बना लेना -
यही हलचल में अचल रहने का साधन है।

अपने अधिकार और प्रेम की
सूक्ष्म रस्सी से बाप को बाँधकर रखो तो
सहयोग मिलता रहेगा।

हर बोल, हर कर्म की अलौकिकता ही पवित्रता है,
साधारणता को अलौकिकता में परिवर्तन कर दो।

दृढ़ संकल्प करना ही व्रत लेना है,
सच्चे भक्त कभी व्रत को तोड़ते नहीं हैं।

संकल्प शक्ति को जमा कर
स्व-प्रति वा विश्व-प्रति इसका प्रयोग करो।

जो वेस्ट और निगेटिव संकल्प चलते हैं उन्हें
परिवर्तन कर विश्व कल्याण के कार्य में लगाओ।

संकल्प के खज़ाने के प्रति एकानामी के अवतार बनो।

निर्भय और हर्षितमुख हो बेहद के खेल को देखो तो
हलचल में नहीं आयेंगे।

मन-बुद्धि को शक्तिशाली बना दो तो
कोई भी हलचल में अचल-अडोल रहेंगे।

संगमयुग के सुख और सुहेजों को इमर्ज रखो तो
अलौकिक नशे में रहेंगे।

हज़ार भुजा वाले बाप को साथी बना लो तो
किसी भी कार्य में थकेंगे नहीं।

पवित्रता ही महानता है और
यही योगी जीवन का आधार है।

जहाँ अपवित्रता का अंश है
वहाँ पवित्र बाप की याद ठहर नहीं सकती।

अब सम्पूर्णता का समय समीप आ रहा है
इसलिए मन्सा में भी अपवित्रता का अंश न हो।

बाहर के साधनों वा सेवा द्वारा अपने आपको खुश
करना यह भी स्वयं को धोखा देना है।

ब्राह्मण जीवन का आन्तरिक वर्सा मन की सन्तुष्टता
है इसके लिए मन्सा पवित्र चाहिए।

भाव और भावना की पवित्रता ही
सेवा का फाउण्डेशन है।

बहुतकाल की श्रेष्ठ स्थिति ही
बहुतकाल के सुख का आधार है।

विनाश की डेट का इन्तजार करने के बजाए
बहुतकाल का इन्तजाम करो।

आप सम्पन्न बनो तो
प्रत्यक्षता का पर्दा खुल जायेगा।

निःस्वार्थ, युक्तियुक्त सेवाभाव से सेवा करो
तब पुण्य की पूँजी जमा होगी।

बाप को साथी बना कर सेवा करो तो
पुण्य का खाता जमा हो जायेगा।

ऐसे खुश रहो जो आपकी खुशी का चेहरा
देख, रोने वाले भी खुश हो जाएँ।

जहाँ सर्व प्राप्तियाँ हैं वहाँ खुशी है, खुश रहो
और खुशी बाँटो तो खुशनसीब बन जायेंगे।

सदा मौज का अनुभव करना है तो
बाप के साथ का सहयोग लो।

अपनी डिक्शनरी से मूंझना शब्द निकाल दो तो
मौज का अनुभव करेंगे।

दिल से बाबा कहो तो
परिस्थितियां भाग जायेंगी।

एक लक्ष्य, एकमत हो तो अवस्था एकरस रहेगी,
अनेक रस में गये तो माया खा जायेगी।

विशेष आत्मा बनना है तो औरों की विशेषता देखो
और अपनी विशेषताओं को कार्य में लगाओ।

स्वराज्य-अधिकारी वह है
जिसमें रूलिंग और कन्ट्रोलिंग पावर है।

वायुमण्डल में व्यर्थ और अलबेलेपन के
संस्कारों का इमर्ज होना ही माया के वार का
साधन है।

बाप के साथ का अनुभव प्रैक्टिकल में इमर्ज करो
तो माया वार करने के बजाए हार खा लेगी।

आलमाइटी अथॉरिटी साथ है तो सर्व शक्तियों की
पावर इमर्ज रूप में अनुभव करो।

माया के वार में दिलशिकस्त होने के बजाए
उसकी चाल को समझ कर विजयी बनो।

जब संकल्प, समय और संस्कारों पर
कण्ट्रोल हो तब कर्मातीत अवस्था होगी।

मन-बुद्धि को आर्डर प्रमाण चलाना ही
सच्ची साधना है।

किसी की गलती को फैलाने के बजाए समा
लो तो वायुमण्डल शक्तिशाली बन जायेगा।

तन, मन, समय और धन को सफल करना ही
पुण्य का खाता जमा करना है।

बाप समान बनना है तो रोज़ त्रिनेत्री बन
तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ।

तीव्र पुरुषार्थ की लगन को अग्नि रूप बनाओ,
तो पुराने हिसाब-किताब भस्म हो जायेंगे।

योग की ज्वाला और ज्ञान की शीतलता द्वारा
आत्माओं को पापों की आग से मुक्त करो।

आपकी पावरफुल ज्वाला रूप की याद ही
बेहद के वैराग्य वृत्ति को प्रज्वलित करेगी।

वानप्रस्थी वह है जो अपने सर्व खज़ानों को
औरों के प्रति कार्य में लगाये।

मास्टर दाता वह है जो निःस्वार्थ बन
खुशी, शान्ति वा प्रेम की अनुभूति कराये।

आपस में दान देने के बजाए, एक-दो को
सहयोग दो, यही नम्बरवन सेवा है।

समर्थ वायदे वह हैं जिन वायदों में फायदा है।

ज्वालामुखी हाइएस्ट स्टेज पर रहो तो
छोटी-छोटी बातें
गुडियों का खेल अनुभव होंगी।

मोहब्बत से मेहनत को खत्म करो,
अलबेलेपन वा आलस्य से नहीं।

सेकण्ड में व्यर्थ देह-भान से मन-बुद्धि को
एकाग्र कर लेना, यही है कण्ट्रोलिंग पावर।

जब बेहद की वैराग्य- वृत्ति उत्पन्न हो तब आत्मायें
कुछ पाप कर्मों के बोझ से मुक्त हों।

मन-बुद्धि की एक्सरसाइज़ के अनुभवी बनो
तो आत्मा शक्तिशाली बन जायेगी।

संकल्पों को प्रैक्टिकल में लाना है तो
मालिकपन की अथॉरिटी में
सेंट परसेन्ट रहो।

शक्तिशाली योग द्वारा लाइट के कार्ब में
रहना ही सेफ्टी का कवच है।

त्रिकालदर्शी की स्टेज पर बैठ नथिंगन्यु की
नालेज से बेफिकर बादशाह बनो।

राय देने के समय मालिक बनो
और फाइनल होने के समय बालक।

हाँ जी का पाठ पढ़ना अर्थात्
एक-दो को रिगार्ड देना ही दुआयें लेना है।

सेकण्ड में अपने को विदेही बना लेना -
यही हलचल में अचल रहने का साधन है।

परमात्म-स्नेह का अनुभव कर, उसमें
समाये रहो तो मेहनत से मुक्त हो जायेंगे।

संगठन को शक्तिशाली बनाए
एक-दो को हिम्मत दे
समीप लाना ही सफलता का साधन है।

मर्यादा पुरुषोत्तम बन संगठन को स्नेही बनाना ही
दिलाराम के स्नेह का रिटर्न है।

सेवास्थान, सेवा-साथी और साधनों के लगाव से
मुक्त रहना ही उपराम वृत्ति है।

आप बेहद घड़ी की सुइयां जब सम्पन्नता तक
पहुँचो तब समाप्ति की घण्टी बजे।

खुशनुमा खुशनसीब वह है
जो खुशियों के खजाने से सम्पन्न है।

जहाँ विश्व-रक्षक बाप है
वहाँ विघ्न नजदीक नहीं आ सकता।

सदा सेवा के उमंग-उत्साह में रहना,
यही माया से सेफ्टी का साधन है।

पुरुषार्थ में सच्चाई हो तो बापदादा की
एकस्ट्रा मदद का अनुभव होता रहेगा।

गम्भीरता के गुण को धारण कर लो तो
जमा का खाता भरपूर हो जायेगा।

अमृतवेले दिल में परमात्म स्नेह को समा लो तो और कोई
स्नेह अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता।

दिल में परमात्म-प्यार वा शक्तियाँ समाई हुई हैं तो
मन में उलझन आ नहीं सकती।

जो सम्पूर्ण लगाव मुक्त हैं, वही प्रकृति को
पावन बनाने की सेवा कर सकते हैं।

पवित्रता का पिल्लर मजबूत हो तो यह पिल्लर
लाइट हाउस का काम करता रहेगा।

अपने धारणा स्वरूप से योगी जीवन का
प्रभाव डालने वाले ही अनुभवी मूर्त हैं।

अपनी चलन और चेहरे से बाप का
साक्षात्कार कराना - यही नम्बरवन सेवा है।

निमित्त उसे कहा जाता जो जिम्मेवारी
सम्भालते भी सदा हल्के हो।

निश्चय, इस ब्राह्मण जीवन की
सम्पन्नता का फाउण्डेशन है।

योगी तू आत्मा वह है
जो सदा क्लीन और क्लीयर है।

हर कर्म करते डबल लाइट रहने वाले ही
धारणामूर्त आत्मा हैं।

निमित्त और निर्माणचित्त रहना –
यही सच्चे सेवाधारी का लक्षण है।

झमेलों में फंसने के बजाए सदा मिलन मेले में रहो
तब कहेंगे श्रेष्ठ आत्मा।

ब्राह्मण संसार में सर्व का सम्मान प्राप्त करना है तो
बापदादा के दिलतख्तनशीन बनो।

फ़रिश्ता बनना है तो व्यर्थ बोल वा डिस्टर्ब करने
वाले बोल से मुक्त रहो।

घबराना तथा शिकायत करना, अज्ञान और
आध्यात्मिक अन्धकार के निश्चित चिह्न हैं।

एक-दो को देखने के बजाए स्वयं को देखना
और परिवर्तन करना ही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है।

बोल और चाल-चलन प्रभावशाली हो तो
सेवा में सफलता मिलती रहेगी।

श्रेष्ठ वा नम्बरवन सेवाधारी वह है
जो बिगड़े हुए को सुधारने की सेवा करता है।

साक्षी होकर हर खेल को देखने के अभ्यासी
बनो तो सेफ रहेंगे।

जिनमें परखने की शक्ति है
वे फौरन परख कर फैसला करते हैं
इसलिए सफलतामूर्त बनते हैं।

जिनमें स्नेह, शक्ति और ईश्वरीय आकर्षण
है, उनके सब सहयोगी बनते हैं।

सर्व प्राप्तियों के नशे में रहो तो
सदा प्रसन्नचित रहेंगे।

मन-बुद्धि को भटकने से बचाओ तो
एकाग्रता की शक्ति जमा हो जायेगी।

दृढ़ता की शक्ति से मन को कण्ट्रोल करना
ही योगी तू आत्मा की निशानी है।

ब्राह्मण जीवन की विशेषता प्रसन्नता है,
प्रसन्नता अर्थात् आत्मिक मुस्कराहट।

बेहद के वैराग्य वृत्ति को धारण कर लो तो
अलबेलेपन की लहर समाप्त हो जायेगी।

श्रीमत की लगाम मजबूत पकड़ लो तो
मन रूपी घोड़ा भाग नहीं सकता।

जिम्मेवारी उठाने वाली आत्मा को
एक्स्ट्रा दुआओं का अधिकार प्राप्त हो जाता है।

जिनका स्नेह सेवा अर्थ है, स्वार्थ से नहीं
वे सहज नष्टोमोहा बन जाते हैं।

परिस्थितियों में घबराने के बजाए उनसे पाठ सीख
कर आगे बढ़ने वाले ही शक्तिशाली आत्मा हैं।

जिनके पास शुभचिंतन की शक्ति है,
वे हर निगेटिव को पॉजिटिव में बदल देते हैं।

किसी भी प्रकार की हलचल में दिलशिकस्त होने के
बजाए बड़ी दिल वाले बनो।

निर्णय करने की शक्ति धारण कर लो तो
मन में उलझन आ नहीं सकती।

अपनी स्व-स्थिति शक्तिशाली बनाओ तो
परिस्थितियाँ आपके आगे कुछ भी नहीं हैं।

त्रिकालदर्शी की सीट पर सेट होकर हर कर्म
करो तो माया दूर से ही भाग जायेगी।

पहले सोचो फिर करो.....
यही ज्ञानी तू आत्मा का गुण है।

समय और संकल्प के खज़ाने की बचत करो
तो जमा का खाता भरपूर हो जायेगा।

सदा करावनहार बाप की स्मृति रहे तो
मैं-पन आ नहीं सकता।

दिल और दिमाग दोनों के बैलेन्स से सेवा
करो तो सफलता मिलती रहेगी।

मन्सा सेवा करनी है तो शुभ भावना, शुभ कामना के श्रेष्ठ संकल्प से सम्पन्न बनो।

सर्वशक्तिवान् को साथी बना लो तो सफलता आपके चरणों में आ जायेगी।

बाप के साथ को यूज़ करो तो कभी दिलशिकस्त नहीं हो सकते।

सम्पूर्ण सत्यता की शक्ति ही पवित्रता का आधार है।

सत्यवादी आत्मा के चेहरे और चलन में दिव्यता अवश्य होगी।

अपने सत्य स्वरूप की स्मृति में रहो तो सत्यता की शक्ति से सम्पन्न बन जायेंगे।

यदि सहनशीलता का गुण है तो सत्यता की शक्ति स्पष्ट दिखाई देगी।

स्वयं को निमित्त करनहार समझ कर चलो तो
कभी थकावट नहीं हो सकती।

सच्चे रहमदिल बनो तो देह वा
देह-अभिमान की आकर्षण नहीं हो सकती।

निःस्वार्थ और लगावमुक्त रहम हो तो
बुद्धि किसी में फँस नहीं सकती।

सबकी अच्छाइयों को धारण करते रहो तो
किसी की अच्छाई पर प्रभावित नहीं होंगे।

सदा न्यारे और बाप के प्यारे रहना ही
स्वयं को सेफ रखने का साधन है।

संगठन में सबकी शुभ भावनायें और सहयोग की
बूँद से बड़ा कार्य भी सहज हो जाता है।

रहमदिल बन सेवा द्वारा निराश और थकी हुई
आत्माओं को सहारा देना सबसे बड़ा पुण्य है।

सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न बनो तो
सदा प्रसन्नचित और सब प्रश्नों से
मुक्त रहेंगे।

सफलता को परमात्म बर्थराइट समझ कर
चलो तो सदा प्रसन्नचित रहेंगे।

निश्चय और जन्म सिद्ध अधिकार की शान
में रहो तो कभी परेशान नहीं हो सकते।

नॉलेजफुल आत्मा व्यर्थ प्रश्नों को स्वाहा कर
समय को सफल करती है।

आपके जीवन का श्वास खुशी है,
इसलिए खुशी में रहो और
सबको खुशी का दान देते चलो।

कर्मयोगी वह हैं जो साधनों को
कमल पुष्प बन कर यूज़ करते हैं।

साधनों को कार्य में लाते उनके प्रभाव से न्यारे और
बाप के प्यारे बनो।

कोई भी फल फलीभूत तब होगा
जब वैराग्य की योग्य धरनी होगी।

बेहद के वैराग्य वृत्ति का फाउण्डेशन मजबूत कर लो तो
सेकण्ड में अशरीरी बनना सहज है।

शक्तिशाली वह है जो कारण रूपी निगेटिव को
समाधान रूपी पॉजिटिव में परिवर्तन कर दे।

परेशान आत्माओं को अपनी श्रेष्ठ शान में
स्थित कर देना ही सच्ची सेवा है।

नम्बरवन सेवाधारी वह है जो
बाप समान बिगड़ी को बनाने की सेवा करता है।

सच्ची दिल से अपने सर्व खजाने सफल करने वाले
ही भाग्यवान आत्मा हैं।

जो परमात्म स्नेह में समाये रहते हैं
वे मेहनत से सहज मुक्त हो जाते हैं।

स्नेह की छत्रछाया के अन्दर रहो तो
माया आ नहीं सकती।

बाप के प्यार के पीछे व्यर्थ संकल्प न्योछावर
कर दो, यही सच्ची कुर्बानी है।

विश्व को सकाश देने की सेवा करनी है तो
बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज रहे।

सर्व प्राप्तियाँ होते भी वृत्ति उपराम रहे
यही वैराग्य वृत्ति की निशानी है।

सदा स्मृति रहे कि ड्रामा में
सब अच्छा ही होना है
तो बेफिक्र बादशाह की स्थिति में रह सकेंगे।

श्रेष्ठ आत्मा वह है जो हर प्रकार की सेवाओं
का चांस लेकर दुआओं से अपनी झोली भरता रहे।

सुख स्वरूप बन कर
सुख देने की सेवा करते रहो तो
पुरुषार्थ में दुआयें एड होती जायेंगी।

दुआयें लेते और सर्व को दुआयें देते रहो तो
सहज मायाजीत बन जायेंगे।

सुख के खाते को जमा करने के लिए
मर्यादापूर्वक दिल से सबको सुख दो।

ब्राह्मण जीवन की नेचुरल नेचर है -
गुण स्वरूप, शक्ति स्वरूप बनना।

युक्तियुक्त बोल वे हैं जो
मधुर और शुभ भावना सम्पन्न हों।

किसी के प्रभाव में प्रभावित होने के बजाए
ज्ञान का प्रभाव डालने वाले बनो।

अपनी मन्सा, वाचा की शक्ति से विघ्नों का
पर्दा हटा दो तो अन्दर कल्याण का दृश्य
दिखाई देगा।

अन्तर्मुखी वे हैं जो व्यर्थ संकल्पों से भी
मन का मौन रखते हैं।

सच्ची दिल से निःस्वार्थ सेवा में आगे बढ़ते
रहो तो पुण्य का खाता जमा होता जायेगा।

बाप से, सेवा से और परिवार से सच्ची
मुहब्बत हो तो मेहनत से छूट जायेंगे।

सन्तुष्ट रहना और सर्व को सन्तुष्ट करना
इससे ही दुआओं का खाता जमा होता है।

आपको कोई अच्छा दे या बुरा
लेकिन आप सबको स्नेह दो, सहयोग दो,
रहम करो, इसी में महानता है।

अपने व्यस्त मन-बुद्धि को
सेकण्ड में स्टॉप करने के अभ्यासी बनो तो
सहजयोगी बन जायेंगे।

पॉजिटिव
संकल्प और शक्तिशाली वृत्ति ही वायुमण्डल को
परिवर्तन करने का आधार है।

भाग्य का अधिकार लेना है तो
मेरे को तेरे में परिवर्तन कर दो।

एक परमात्मा के प्यारे बनो तो
विश्व की आत्माओं का प्यार मिलता रहेगा।

विश्व की आत्माओं को
सकाश देने के लिए अविनाशी सुख,
शान्ति वा सच्चे प्यार का स्टॉक जमा करो।

सर्व खज़ानों को सेवा में लगा कर
अपने सर्व खाते भरपूर करो।

पावरफुल वह है
जो फौरन परख कर फैसला कर दे।

स्नेह, शक्ति और ईश्वरीय आकर्षण
स्वयं में भरो तो सब सहयोगी बन जायेंगे।

शीतल बन दूसरों को शीतल दृष्टि से
निहाल करने वाले शीतल योगी बनो।

आज्ञाकारी वे हैं जो मन और बुद्धि को
मनमत से सदा खाली रखते हैं।

पवित्रता ही ब्राह्मण जीवन का मुख्य
फाउन्डेशन है, धरत परिये धर्म न छोड़िये।

शान्ति का दूत बन सबको शान्ति का दान दो,
यही आपका आक्यूपेशन है।

सच्ची सेवा द्वारा सर्व की आशीर्वाद प्राप्त
करने वाले ही तकदीरवान हैं।

रक्षाबन्धन पर बी.के. भाई-बहनों को ये स्लोगन वरदान रूप दिये जा सकते हैं –

आप निश्चय और फलक से कहते हो
''मेरा बाबा'' इसलिए माया
आपके समीप आ नहीं सकती।

आप बाप के प्यार के पीछे व्यर्थ संकल्पों को
भी न्योछावर करने वाली समर्पित आत्मा हो।

आप ज्ञानी तू आत्मा हैं इसलिए गुणों वा
विशेषताओं का अभिमान आ नहीं सकता।

पवित्रता ही आपके जीवन की नवीनता है,
यही ज्ञान का फाउण्डेशन है।

आपने दृष्टि-वृत्ति में भी
पवित्रता को अण्डरलाइन किया है
क्योंकि स्मृति में है कि अब घर जाना है।

त्रिकालदर्शी वे हैं जो किसी भी बात को एक काल की दृष्टि से नहीं देखते, हर बात में कल्याण समझते हैं।

अपनी सर्व जिम्मेवारियों का बोझ बाप के हवाले कर डबल लाइट बनो।

दिल में सदा यही अनहद गीत बजता रहे कि मैं बाप की, बाप मेरा।

सदा खुशी की खुराक द्वारा तन्दुरुस्त, खुशी के खजाने से सम्पन्न खुशनुमाबनो।

स्वयं को परमात्म प्यार के पीछे कुर्बान करने वाले ही सफलतामूर्त बनते हैं।

आप अमृतवेले दिल में
परमात्म स्नेह को समा लेते हो इसलिए
और कोई स्नेह आकर्षित नहीं कर सकता।

आपके दिल में परमात्म-प्यार वा शक्तियाँ
समाई हुई हैं इसलिए मन में
उलझन आ नहीं सकती।

आप प्रकृति को भी पावन बनाने वाले
सम्पूर्ण लगाव मुक्त आत्मा हैं।

आप क्रोध मुक्त हो
क्योंकि निःस्वार्थ सेवा करते हो।

आपने पवित्रता का पिल्लर मजबूत किया है,
यह पिल्लर लाइट हाउस का
काम करता रहेगा।

आप अपनी सूक्ष्म कमजोरियों का चिंतन
करके उन्हें मिटाने वाली
स्वचिंतक आत्मा हो।

आप पवित्रता की शक्ति से
अपने संकल्पों को शुद्ध,
ज्ञान स्वरूप बना कर कमजोरियों को
समाप्त करने वाली शक्तिशाली आत्मा हो।

आप समस्या स्वरूप नहीं लेकिन
समाधान स्वरूप बनने वाली श्रेष्ठ आत्मा हैं।

आप सेवा के उमंग-उत्साह में रहते हो, यही माया
से सेफ्टी का साधन है।

आपके पुरुषार्थ में सच्चाई है
इसलिए बापदादा की
एकस्ट्रा मदद का अनुभव होता है।

आपने गम्भीरता के गुण को धारण किया है
इसलिए जमा का खाता भरपूर है।

आप सदा क्लीन और क्लीयर रहने वाले
योगी तू आत्मा हैं।

आप हर कर्म करते डबल लाइट रहने वाली
धारणामूर्त आत्मा हैं।

आप निमित्त और निर्माणचित्त हैं –
यही सच्चे सेवाधारी का लक्षण है।

आप झमेलों में फंसने के बजाए
सदा मिलन मेले में रहने वाली
श्रेष्ठ आत्मा हैं।

आप सदा उड़ती कला में उड़ते, झमेलों के
पहाड़ को भी क्रास करने वाली आत्मा हैं।

आप ब्राह्मण संसार में सर्व का सम्मान प्राप्त
करने वाली तख्तनशीन आत्मा हैं।

जैसा समय वैसा अपने को
मोल्ड कर लेने वाले आप रीयल गोल्ड हैं।

आप अपने धारणा स्वरूप से योगी जीवन का प्रभाव डालने वाली अनुभवी आत्मा हो।

आप सच्ची सेवा द्वारा खुशी और सर्व की दुआओं का अनुभव करते रहते हो।

आपकी नम्बरवन सेवा है - अपने चलन और चेहरे से बाप का साक्षात्कार कराना।

आप निमित्त आत्मा,
जिम्मेवारी सम्भालते भी सदा हल्के हो।

निश्चय ही आपके इस ब्राह्मण जीवन की सम्पन्नता का फाउण्डेशन है।

आप यथार्थ निश्चयबुद्धि हैं
इसलिए सदा विजयी हैं।

आपने सर्वशक्तिवान बाप को अपना साथी बनाया है इसलिए पश्चाताप हो नहीं सकता।

आप खुशी के खज़ाने से सम्पन्न हो
इसलिए इच्छा-मात्रम्-अविद्या हो।

आप फ़रिश्ता बनने वाली आत्मा व्यर्थ बोल वा
डिस्टर्ब करने वाले बोल से मुक्त हो।

आपके वचन हर आत्मा को कोई-न-कोई प्राप्ति
कराने वाले सत वचन हैं।

आप एक-दो को देखने के बजाए
स्वयं को देखने और
परिवर्तन करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हैं।

आपका बोल और चाल-चलन प्रभावशाली है
इसलिए सेवा में सफलता मिलती है।

आप बिगड़े हुए को सुधारने वाली
श्रेष्ठ सेवाधारी आत्मा हो।

आप साक्षी होकर हर खेल देखने के
अभ्यासी हो इसलिए सेफ हो।

आपमें परखने की शक्ति है इसलिए फौरन परख
कर फैंसला करने से सफलता होती है।

आपमें स्नेह, शक्ति और ईश्वरीय आकर्षण
है इसलिए सब आपके सहयोगी बनते हैं।

आपको सर्व प्राप्तियाँ हैं
इसलिए सदा प्रसन्नचित हो।

आपके पास एकाग्रता की शक्ति है
इसलिए मन-बुद्धि भटकती नहीं।

आप दृढ़ता की शक्ति से मन को कन्ट्रोल
करने वाली योगी तू आत्मा हैं।

आपके ब्राह्मण जीवन की विशेषता प्रसन्नता
है, प्रसन्नता अर्थात् आत्मिक मुस्कराहट।

अनेकता में एकता लाना, बिगड़ी को बनाना..
यही आपकी सबसे बड़ी विशेषता है।

आप फ़रिश्ता रूप में रहने के अभ्यासी हो इसलिए
कोई भी विघ्न अपना प्रभाव डाल नहीं सकता।

आप चलते-फिरते फ़रिश्ता स्वरूप में रहते हो –
यही ब्रह्मा बाप के दिलपसन्द गिफ्ट है।

आपका निश्चय दृढ़ है
इसलिए विजय टल नहीं सकती।

आपके पास अलबेलेपन की लहर आ नहीं सकती
क्योंकि आप बेहद के वैरागी हैं।

आपने बाप को अपना साथी बनाया है
इसलिए सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न हो।

आपका सोचना और कहना समान है
इसलिए हर कार्य में सफलता मिलती है।

आपने मन रूपी मन्त्री को
अपना सहयोगी बनाया है
इसलिए आप स्वराज्य अधिकारी आत्मा हो।

आप स्वराज्य के मालिक,
सम्पूर्ण वर्से के अधिकारी हो।

आप जिम्मेवारी उठाने वाली आत्मा हो इसलिए
एक्स्ट्रा दुआओं का अधिकार प्राप्त है।

आपका स्नेह सेवा अर्थ है,
स्वार्थ से नहीं इसलिए नष्टोमोहा हो।

आप परिस्थितियों में घबराने के बजाए
उनसे पाठ सीख कर आगे बढ़ने वाली
शक्तिशाली आत्मा हो।

आपके पास शुभचिंतन की शक्ति है
जिससे नगेटिव भी पाजिटिव में
बदल जाता है।

आपने समय और संकल्प के खजाने की बचत की
है इसलिए जमा का खाता भरपूर है।

आपको सदा करावनहार बाप की स्मृति है
इसलिए मैं पन आ नहीं सकता।

आप दिल और दिमाग दोनों के बैलेन्स से
सेवा करते हो इसलिए सफलता मिलती है।

आप शुभ भावना, शुभ कामना के श्रेष्ठ
संकल्प से सम्पन्न हो इसलिए
मन्सा शक्तिशाली है।

आपने सर्वशक्तिवान को साथी बनाया है
इसलिए सफलता आपके चरणों में
आ जायेगी।

आप बाप के साथ को यूज़ करते हो
इसलिए कभी दिलशिकस्त नहीं हो सकते।

आप किसी भी प्रकार की हलचल में
दिलशिकस्त होने के बजाए बड़ी दिल वाले हो।

आपके पास निर्णय करने की शक्ति है
इसलिए मन में उलझन आ नहीं सकती।

आप बाप को जान कर दिल से बाबा कहते हो,
यही सबसे बड़ी विशेषता है।

आपने अपनी स्व-स्थिति
शक्तिशाली बनाई है
इसलिए परिस्थिति आपके आगे कुछ भी नहीं है।

आप त्रिकालदर्शी की सीट पर सेट होकर
हर कर्म करते हो
इसलिए माया दूर से ही भाग जाती है।

आप पहले सोचते हो फिर करते हो..
यही ज्ञानी तू आत्मा का गुण है।

आप सदा न्यारे और बाप के प्यारे रहते हो - यही सेफ रहने का साधन है।

आपकी शुभ भावनायें और सहयोग की बूँद से बड़ा कार्य भी सहज हो जाता है।

आप रहमदिल बन सेवा द्वारा निराश और थकी हुई आत्माओं को सहारा देने वाली आत्मा हो।

आप सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न हो इसलिए प्रसन्नचित हो, सब प्रश्नों से मुक्त हो।

आप सफलता को परमात्म-बर्थराइट समझ कर चलते हो इसलिए सदा प्रसन्नचित रहते हो।

आप निश्चय और जन्म-सिद्ध अधिकार की शान में रहते हो इसलिए परेशान नहीं हो सकते।

आप नालेजफुल आत्मा व्यर्थ प्रश्नों को स्वाहा कर समय को सफल करने वाली हो।

स्व-पुरुषार्थ और सेवा के बैलेन्स से बंधन को
सम्बन्ध में बदलने वाली आप ज्ञानी तू आत्मा हैं।

आप स्वयं को निमित्त करनहार समझ कर चलते
हो इसलिए कभी थकावट नहीं हो सकती।

आपमें जो रहम की भावना है,
यह सहज ही निमित्त भाव इमर्ज कर देती है।

आप सच्चे रहमदिल हैं, इसलिए
देह वा देह–अभिमान की आकर्षण नहीं हो सकती।

आपमें
निःस्वार्थ और लगावमुक्त रहम है..
इसलिए बुद्धि किसी में फँस नहीं सकती।

आप अच्छाई को धारण करते हो
लेकिन अच्छाई में प्रभावित नहीं होते,
यही आपकी विशेषता है।

आपके जीवन का श्वास खुशी है, आप खुशी में रहने
और खुशी का दान देने वाली आत्मा हो।

आपमें सेवा का उमंग-उत्साह भी है तो बेहद की
वैराग्य वृत्ति भी है -यही सफलता का आधार है।

आप साधनों को कमल पुष्प बन कर
यूज़ करते हो इसलिए कर्मयोगी हो।

आप साधनों को यूज़ करते
उनके प्रभाव से न्यारे और बाप के प्यारे हो।

आपने वैराग्य की ऐसी योग्य धरनी बनाई है
जिसमें जो भी बीज डालेंगे
वह फलीभूत अवश्य होगा।

आपने बेहद के वैराग्य वृत्ति का फाउण्डेशन मजबूत
किया है इसलिए सेकण्ड में
अशरीरी बनना सहज है।

आप विल पावर वाली आत्मा हो क्योंकि
आपका सोचना और करना समान है।

आप मैं के बजाए बाबा-बाबा कहते
हर कार्य करते हो, यही याद का प्रूफ है।

आप अपने अच्छे वायब्रेशन से निगेटिव सीन
को पॉजिटिव में बदल देने वाली
शक्तिशाली आत्मा हो।

आपके पास जो भी शक्तियाँ हैं उन्हें समय
पर यूज़ करते हो इसलिए बहुत
अच्छे-अच्छे अनुभव होते हैं।

आप हर गुण, हर शक्ति का अनुभव करने
वाली अनुभवी मूर्त आत्मा हो।

आप अनुभवी आत्मा कभी वायुमण्डल वा
संग के रंग में नहीं आ सकती।

आपने हिम्मत का कदम आगे बढ़ाया है तो
बाप की सम्पूर्ण मदद मिलती रहेगी।

आप वाणी द्वारा सबको सुख और शान्ति देने वाली
गायन योग्य आत्मा हो।

सदा मुस्कराते रहना यही आपकी विशेषता है,
यही सन्तुष्टता की निशानी है।

आप अपने स्व-पुरुषार्थ के वायब्रेशन से दूसरों की
माया को सहज भगाने वाली आत्मा हो।

आपने अपनी नज़रों में बाप को समाया हुआ है
इसलिए माया की नज़र लग नहीं सकती।

आप ऐसे खुशनुमा हो जो मन की खुशी
सूरत से स्पष्ट दिखाई देती है।

आप अपनी साधना द्वारा हाय-हाय को
वाह-वाह में परिवर्तन करने वाली आत्मा हो।

आपके चेहरे और चलन से
खुशनसीबी का अनुभव होता है।

आप खुशी के खज़ाने से सम्पन्न और
खुशी की खुराक से तन्दुरुस्त आत्मा हो।

आप साक्षीपन की सीट पर रहते हो इसलिए
सदा खुशी की अनुभूति होती है।

बापदादा आपके साथ-साथ है इसलिए
माया का प्रभाव पड़ नहीं सकता।

आप साक्षीपन के तख्त नशीन हो इसलिए
समस्यायें तख्त के नीचे रह जाती हैं।

आप विघ्न-विनाशक आत्मा हो
क्योंकि आपकी बुद्धि में है कि विघ्नों का
काम है आना और हमारा काम है
विघ्न-विनाशक बनना।

आप बड़े बाप के बच्चे हो इसलिए न तो छोटी दिल करते और न छोटी बातों में घबराते हो।

आप ज्ञान और योग से कमाल करने वाले हो, बातों की परवाह करने वाले नहीं।

आपके हाथ में श्रेष्ठ भाग्य की रेखा खींचने का कलम है – श्रेष्ठ कर्म।

आपने श्रेष्ठ भाग्य की रेखाओं को इमर्ज किया है इसलिए पुराने संस्कारों की रेखायें मर्ज हो गई हैं।

आप सर्व शक्तियों वा ज्ञान के खजानों से सम्पन्न हो – यही संगमयुग की प्रालब्ध है।

आप रहमदिल बन सर्व गुणों और शक्तियों का दान देने वाले मास्टर दाता हो।

आप मनोबल से सेवा करते हो इसलिए आपको इसकी कई गुणा ज़्यादा प्रालब्ध मिलेगी।

आप ज्ञानी-योगी तू आत्मा
समय प्रमाण शक्तियों को यूज़ करने वाली हो।

आप अपने किये हुए संकल्पों पर दृढ़ता का ठप्पा
लगाने के कारण विजयी बन जाते हो।

आप मुहब्बत के झूले में बैठ मौज का अनुभव करते
हो इसलिए मेहनत नहीं लगती।

आप अचल स्थिति के आसन पर बैठने वाली
श्रेष्ठ आत्मा हो।

आपने हर गुण और ज्ञान की बातों को
अपने जीवन का निज़ी संस्कार बनाया है
इसलिए पुराने संस्कार इमर्ज नहीं हो सकते।

आप ज्ञान रत्नों से, गुणों और शक्तियों से खेलने
वाली रॉयल आत्मा हो,
मिट्टी से नहीं खेल सकती।

आप दूसरों को सहयोग देकर स्वयं के खाते
जमा करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हो।

आपके पास साइलेन्स की शक्ति इमर्ज रूप
में है इसलिए सेवा की गति
फास्ट हो जायेगी।

आप दिल से सेवा करते हो
इसलिए सर्व की दुआओं की पात्र आत्मा हो।

आप परमात्म-प्यार में लवलीन रहते हो
इसलिए माया की आकर्षण अपनी ओर
आकर्षित नहीं कर सकती।

आप परमात्म-प्यार के सुखदाई झूले में
झूलने वाली श्रेष्ठ आत्मा हो इसलिए
दुःख की लहर आ नहीं सकती।

आपका ज्वालामुखी तीसरा नेत्र खुला हुआ है
इसलिए आपके सामने माया शक्तिहीन है।

आप बेहद में रहते हो इसलिए
हद की बातें स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

आपके चलन और चेहरे पर जो प्रसन्नता की झलक
है, यही रूहानी पर्सनैल्टी की निशानी है।

आप सदा प्रसन्न रहने और सर्व को प्रसन्न करने
वाली दुआओं की पात्र आत्मा हो।

आपका कर्त्तव्य है – असमर्थ आत्माओं को
समर्थी दे उनकी दुआयें लेना।

आप विश्व को सकाश देने की सेवा करने वाले
विश्व सेवाधारी हैं।

आपने अपनी नज़रों में
बापदादा को समाया है इसलिए
नज़र से निहाल करने की सेवा होती रहेगी।

आप अपने सर्व खज़ाने सच्ची दिल से सफल करने वाली भाग्यवान आत्मा हैं।

आप परमात्म-स्नेह में समाये रहते हो इसलिए मेहनत से मुक्त हो।

आप स्नेह की छत्रछाया के अन्दर रहते हो इसलिए माया आ नहीं सकती।

कोई भी कार्य आप डबल लाइट बन कर करते हैं इसलिए मनोरंजन का अनुभव होता है।

आप में बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज रहती है यही विश्व को सकाश देने की सेवा करने का साधन है।

आपको सर्व प्राप्तियाँ होते भी वृत्ति उपराम है - यही वैराग्य वृत्ति की निशानी है।

आप परमात्म-अवार्ड लेने की पात्र आत्मा हो
क्योंकि ध्यान है कि मुझे व्यर्थ और
निगेटिव को अवाइड करना है।

आप सदा उत्साह में रह कर दूसरों को उत्साह
दिलाने वाली महान आत्मा हैं।

आपके संकल्प रूपी पाँव मजबूत हैं इसलिए
काले बादलों जैसी बातें भी परिवर्तन हो जाती हैं।

आप समस्या स्वरूप नहीं
लेकिन समाधान स्वरूप बनने वाली श्रेष्ठ आत्मा हैं।

आप परेशान आत्माओं को अपनी श्रेष्ठ शान में
स्थित करने वाले सच्चे सेवाधारी हैं।

आप बाप समान बिगड़ी को बनाने की सेवा पर हैं,
यही नम्बरवन सेवा है।

आप बेफिक्र बादशाह की स्थिति में रहते हो क्योंकि स्मृति में है कि ड्रामा में सब अच्छा ही होना है।

आप हर प्रकार की सेवाओं का चांस लेकर दुआओं से अपनी झोली भरने वाली श्रेष्ठ आत्मा हैं।

आप सुख स्वरूप बन कर सुख देने की सेवा करते हो इससे पुरुषार्थ में दुआयें एड होती जाती हैं।

आप दुआयें लेते और सर्व को दुआयें देते हो इसलिए सहज मायाजीत बन जायेंगे।

आप पवित्रता की शक्ति से अपने संकल्पों को शुद्ध, ज्ञान स्वरूप बना कर कमजोरियों को समाप्त करने वाली शक्तिशाली आत्मा हो।

आपके इस ब्राह्मण जीवन की नेचुरल नेचर है गुण स्वरूप, शक्ति स्वरूप बनना।

आपका एक-एक बोल युक्तियुक्त है क्योंकि मधुर और शुभ भावना सम्पन्न है।

आप किसी के प्रभाव में प्रभावित होने वाले नहीं, ज्ञान का प्रभाव डालने वाले हो।

आप ट्रस्टी होकर रहते हो क्योंकि आपमें सेवा की शुद्ध भावना है।

आप स्व-परिवर्तन करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हैं इसलिए विजय माला गले में पड़ी हुई है।

आपने अपनी मन्सा-वाचा की शक्ति से विघ्नों का पर्दा हटाया हुआ है इसलिए अन्दर कल्याण का दृश्य दिखाई देता है।

आप अन्तर्मुखी आत्मा हैं, जो व्यर्थ संकल्पों से भी मन का मौन रखती हैं।

आप एकान्तवासी बनने के साथ-साथ एकनामी और एकानामी वाली श्रेष्ठ आत्मा हैं।

आप सच्ची दिल से निःस्वार्थ सेवा में आगे बढ़ते हो
इसलिए पुण्य का खाता जमा है।

बाप से, सेवा से और परिवार से
आपकी मुहब्बत है इसलिए मेहनत से छूटे हुए हो।

आप सन्तुष्ट रहने और सर्व को सन्तुष्ट करने वाली
आत्मा हैं इसलिए दुआओं का खाता जमा है।

आपको कोई अच्छा दे या बुरा लेकिन आपका लक्ष्य
है सबको स्नेह देना, सहयोग देना, रहम करना।

आप अपने व्यस्त मन-बुद्धि को सेकण्ड में स्टॉप
करने के अभ्यासी होने के कारण सहज योगी हो।

आपके पॉजिटिव संकल्प और शक्तिशाली वृत्ति ही
इस वायुमण्डल को परिवर्तन करने का आधार हैं।

आप मेरे को तेरे में परिवर्तन कर भाग्य का
अधिकार लेने वाली भाग्यवान आत्मा हैं।

आप एक परमात्मा के प्यारे बने हो इसलिए
विश्व की आत्माओं का प्यार मिलता रहेगा।

मन और बुद्धि आपके कन्ट्रोल में हैं
इसलिए अशरीरी बनना सहज है।

विश्व की आत्माओं को सकाश देने के लिए
आपके पास अविनाशी सुख, शान्ति वा
सच्चे प्यार का स्टॉक जमा है।

आप सर्व खज़ानों को सेवा में लगाकर अपने
खातों को भरपूर करने वाली आत्मा हैं।

आप बाप के साथ रह कर हर कर्म करते हो
इसलिए डबल लाइट हो।

आप सदा इसी अलौकिक नशे में रहते
''वाह रे मैं'' इसलिए मन और तन से
नेचुरल डाँस करते हो।

आप मुरलीधर की मुरली पर
देह की भी सुध-बुध भूलने वाली,
खुशी के झूले में झूलने वाली सच्ची-सच्ची गोपी हो।

आप शिव बाप के साथ कम्बाइन्ड रहने वाली
शिवशक्ति हो। आपका शृंगार हैं
ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र।

आप सदा बापदादा और परिवार के समीप हो
इसलिए आपके चेहरे पर सन्तुष्टता, रुहानियत
और प्रसन्नता की मुस्कराहट है।

श्रीमत का हाथ सदा आपके साथ है इसलिए सारा
ही युग हाथ-में-हाथ देकर चलते रहेंगे।

आप अपने समय को, सुखों को,
प्राप्ति की इच्छा को सर्व के प्रति
कुर्बान करने वाली महान आत्मा हो।

आप सर्व खज़ानों से सम्पन्न
सदा भरपूरता के नशे में रहने वाली
आत्मा हो।

आप याद द्वारा सर्व शक्तियों का खज़ाना
अनुभव करने वाली शक्तिशाली आत्मा हो।

आप आत्मा सर्व की दुआओं के
खजानों से भरपूर वा सम्पन्न हो इसलिए
पुरुषार्थ में मेहनत नहीं करनी पड़ती।

आप सर्व खज़ानों को स्वयं में समा कर
सम्पन्नता का अनुभव करने वाली
आत्मा हो।

आप त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित हो,
स्वस्थिति द्वारा हर परिस्थिति को पार करने
वाली श्रेष्ठ आत्मा हो।

आप आत्म-ज्ञान के खज़ाने को धारण कर
हर समय, हर कर्म समझ से करने वाली
ज्ञानी तू आत्मा हो।

आप सदा प्रेम, सुख, शान्ति और आनंद के सागर
में समाये हुए सच्चे तपस्वी हो।

आप रहमदिल बन सर्व को दुआयें देने वाली
क्षमाशील आत्मा हो।

आप स्वयं में गुणों को धारण कर दूसरों को भी
गुणदान करने वाली गुणमूर्त आत्मा हो।

आप सर्व की श्रेष्ठ कामनायें पूर्ण करने वाली
दर्शनीयमूर्त आत्मा हो।

आप सत्यता के आधार से सर्व आत्माओं के
दिल की दुआओं का मान प्राप्त करने वाली
भाग्यवान आत्मा हो।

आप चारों ओर के यथार्थ सत्य को
परखने वाले सच्चे बच्चे हो।

आप संगमयुग के स्वराज्य-अधिकारी सो
भविष्य के विश्व राज्य-अधिकारी आत्मा हो।

आप सदा रूहानी नशे में रह
बेगमपुर के बेफिक्र बादशाह का अधिकार
प्राप्त करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हो।

आप सदा बापदादा के स्नेह में समाई हुई
और श्रीमत पर चलने वाली
आज्ञाकारी आत्मा हो।

आप सदा विश्व-कल्याण का और लाइट का
ताज पहनने वाली श्रेष्ठ आत्मा हो।

सदा बेहद की दृष्टि और बेहद की वृत्ति रखने
वाली आप महान आत्मा हो।

आप स्वराज्य का तिलक,
विश्व कल्याण का ताज और स्थिति के तख्त पर
विराजमान राजयोगी आत्मा हो।

आप सदा बेहद की सेवा के उमंग उत्साह में रहने
वाली विशेष आत्मा हो।

आप सदा बापदादा के याद की पालना में
पलने वाली महान आत्मा हो।

आप सदा स्वयं प्रति और सर्व आत्माओं के प्रति
श्रेष्ठ परिवर्तन शक्ति को कर्म में लाने वाली
कर्मयोगी आत्मा हो।

आप स्वयं प्रिय, लोक प्रिय और
प्रभु प्रिय होने के कारण वरदानी मूर्त हो

आप सदा हर्षित रहने वाली आत्मा, प्रकृति वा
आत्माओं के गुणों तरफ आकर्षित नहीं हो सकती।

आप अपनी चलन द्वारा
रूहानी रायॅल्टी की झलक और फलक का
अनुभव करने वाली विशेष आत्मा हो।

आप तन-मन-धन, मन-वाणी और कर्म से
बाप के कर्त्तव्य में सदा सहयोगी सो
योगी आत्मा हैं।

आप नथिंग न्यू की स्मृति से सदा अचल बन
खुशी में नाचने वाली आत्मा हैं।

आप ''निराकार सो साकार'' के महामन्त्र
की स्मृति से निरन्तर योगी आत्मा हैं।

आप योग की शक्ति द्वारा
हर कर्मेन्द्रिय को आर्डर में चलाने वाली
स्वराज्य अधिकारी आत्मा हैं।

आपके दिल में सदा खुशी का सूर्य उदय
रहता है इसलिए आप खुशनुमा आत्मा हैं।

आप सदा अपने श्रेष्ठ पोज़ीशन में
स्थित रह ऑपोज़ीशीन को समाप्त करने
वाली विजयी आत्मा हो।

आप व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन कर
नम्बरवन में आने वाली आत्मा हो।

आप अपने दिव्यता के प्रभाव से
विश्व को दिव्य बनाने वाली श्रेष्ठ आत्मा हो।

आप बुराई को भी अच्छाई में परिवर्तन करने
वाली प्रसन्नचित्त आत्मा हो।

आप सदा वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य! वाह!
यह गीत गाने वाली भाग्यवान आत्मा हो।

आप मास्टर दाता बन सहयोग, स्नेह और
सहानुभूति देने वाली आत्मा हो।

आप परमात्मा रूपी शमा पर
फिदा होने वाले चैतन्य परवाने हो।

आप विश्व में शान्ति की क्रान्ति लाने वाले अवतरित हुए अवतार हैं, आपका किसी में भी ममत्व नहीं।

आप अपनी मीठी दृष्टि और शुभ वृत्ति से अनेकों को परिवर्तन करने वाली आत्मा हो।

आप शान्ति की शक्ति द्वारा सर्व आत्माओं की पालना करने वाले रुहानी सोशल वर्कर हो।

आप शान्ति की लाईट
चारों ओर फैलाने वाले लाइट हाउस हो।

आप श्रेष्ठ शक्तिशाली स्थिति द्वारा
हर परिस्थिति को पार करने वाली आत्मा हो।

आप देह, देह की पुरानी दुनिया और सम्बन्धों से सदा ऊपर उड़ने वाले इन्द्रप्रस्थ निवासी हो।

आप हर सेकेण्ड, हर श्वाँस, हर खज़ाने को सफल करने वाली सफलतामूर्त आत्मा हो।

आपके पास साइलेन्स की बहुत बड़ी शक्ति
है इसलिए स्वीट होम की यात्रा करना
आपके लिए अति सहज है।

आप ज्ञान और योग को हर समय अपने
जीवन की नेचर बनाने वाली आत्मा हो।

आप भाग्यवान आत्मा सदा
परमात्म मुहब्बत के झूले में, उड़ती कला
की मौज में रहने वाली हो।

आप अपने लक्ष्य और लक्षण की समानता
द्वारा बाप समान बनने वाली आत्मा हो।

आप रूहानी वायब्रेशन्स द्वारा अपनी स्थिति
और स्थान को पॉवरफुल बनाने वाले हो।

आप अपने रूहानी वायब्रेशन्स द्वारा
फास्ट गति की सेवा करने वाले
सच्चे सेवाधारी हो।

आप समझ के स्क्रू ड्राइवर से
अलबेलेपन के लूज़ स्क्रू को टाईट कर
सदा अलर्ट रहने वाली आत्मा हो।

समझना, चाहना और करना इन तीनों की समानता द्वारा
आप बाप समान बनने वाली आत्मा हो।

आप स्वयं भगवान द्वारा डायरेक्ट पालना,
पढ़ाई और श्रेष्ठ जीवन की श्रीमत लेने वाली
भाग्यवान आत्मा हो।

आप अपने रूहानी वायब्रेशन्स द्वारा
शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने वाली आत्मा हो।

आप अपने स्व-मान की सीट पर सदा स्थित रहने
वाली और सर्व को सम्मान देने वाली
माननीय आत्मा हो।

आपकी दृष्टि में रहम और शुभ भावना है इसलिए
अभिमान वा अपमान का अंश भी आ नहीं सकता।

आप सदा उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ने वाली
पुरुषार्थी आत्मा हो।

आप मास्टर ज्ञान-सूर्य बन अपने लाइट-माइट की
किरणें सारे विश्व में फैलाने वाले हो।

आप अपनी दृढ़ प्रतिज्ञा से सर्व समस्याओं को
सहज ही पार करने वाले मास्टर सर्वशक्तिवान हो।

आप ब्रह्मा बाप की भुजाओं में समायी हुई
सदा सेफ रहने वाली आत्मा हो।

आप निश्चय बुद्धि आत्मा, निश्चय के आधार पर
सदा अचल अडोल रहने वाली आत्मा हो।
आप समर्थ आत्मा
सर्व शक्तियों के खजाने के अधिकारी हो।

आप प्रत्यक्षता और प्रतिज्ञा के बैलेन्स द्वारा
बापदादा को प्रत्यक्ष करने वाली आत्मा हो।